
विद्या धर्मेण शोभते
गीता परिवार
गीता मैत्री
ગીતા મૈત્રી
ಗೀತಾ ಮೈತ್ರಿ
கீதா மைத்ரி
గీత మైత్రి
ഗീതാ മൈത്രി
Gītā Maitrī
ଗୀତା ମୈତ୍ରୀ
ਗੀਤਾ ਮੈਤ੍ਰੀ
গীতা মৈত্রী
ગીતા મૈત્રી
ಗೀತಾ ಮೈತ್ರಿ
கீதா மைத்ரி
గీత మైత్రి
ഗീതാ മൈത്രി
Gītā Maitrī
ଗୀତା ମୈତ୍ରୀ
ਗੀਤਾ ਮੈਤ੍ਰੀ
গীতা মৈত্রী
गीता मैत्री
श्रीमद्भगवद्गीता
शिशिरांक
LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन
द्वितीय अंक
November- December 2021



संस्थापक अध्यक्ष

प. पू. स्वामी श्रीगोविन्ददेव गिरिजी महाराज

कार्याध्यक्ष

डॉ. संजय मालपाणी, संगमनेर

उपाध्यक्ष

श्री हरिनारायण जी व्यास (दक्षिणांचल प्रभारी)
डॉ. आशू जी गोयल (उत्तरांचल प्रभारी)
आ. प्रमिला जी माहेश्वरी (मध्यांचल प्रभारी)
श्री संदीप जी माहेश्वरी (पूर्वांचल प्रभारी)
श्री गोविंद जी माहेश्वरी (पश्चिमांचल प्रभारी)

कोषाध्यक्ष

श्री. महेंद्र काबरा, मुम्बई

सचिव

श्री. श्रीकांत कासट, संगमनेर

सह सचिव

श्री. गिरीश डागा



मुख्य संपादक

डॉ. आशू जी गोयल

सह संपादक

सुश्री कविता वर्मा

लेखक एवं संकलनकर्ता

श्री घनशाम दास, नई दिल्ली
श्री विमल जैन, कोलकाता
श्री सुरेश दधीच, मुंबई
सौ. सोनाली नंदकिशोर काला, पुणे
श्री सुनील कापड़ी, मुंबई
श्री लखन राठौर, पुणे
श्री महेश शेवाळे, मुंबई
श्रीमती कविता तापड़िया, अहमदाबाद
श्रीमती विम्पा सरवैया, मुंबई
श्री अशोक हरिभाऊ कुलकर्णी, इंदौर

मुखपृष्ठ

सुश्री कश्मीरा, ठाणे

ई-बुक डिज़ाइनर

Pixel N Paper, Pune

अनुक्रमणिका

- शुभकामना 1
- सम्पादकीय 2
- समत्व की साधना 3
- Be a Gītā Volunteer 4-6
- गीता चिन्तनिका सत्र 7-9
- दीपोत्सव 10-12
- November Level 3 Welcome Ceremony 13-15
- November Level 4 Welcome Ceremony 16-17
- गीता जयन्ती उत्सव 18-20
- प्रचलित नववर्ष उत्सव - 'मेरे राम' 21-24
- श्रीज्ञानेश्वरी चिंतन 25-26
- Karma Sādhanā 27
- Learngeeta IT Departmant 28-31
- गीता परिवार नेपाल की स्थापना 32
- प्रश्नमाला, क्रॉसवर्ड, शब्द खोजो 33-39
- मनोगत 40-48
- Volunteers' Brigade 49-50
- आगामी कार्यक्रम सूची 51
- Śrīmad-Bhagavadgītā Certification Programme 52-53
- List of Geetavraties 54-55
- आंकड़ों की नज़र में.. 56

शुभकामना



गीता - मैत्री करते करते
जो वैश्विक विस्तार हुआ
उसे देख तन पुलकित एवं
मन आह्लादित खूब हुआ ।

और अभी आगे बढ़ना है
यह तो केवल एक पड़ाव
बढ़े चलो सब मिलकर मित्रों
कृष्ण भक्ति का सही बहाव ।

सभी का अभिनंदन!

- स्वामी गोविंददेव गिरि

सम्पादकीय



गीता मैत्री का दूसरा अंक पाठकों को समर्पित करते हुए अत्यन्त आनन्द की अनुभूति हो रही है। लर्नगीता का कार्य साक्षात् यज्ञ के समान कल्याणप्रद, आनन्दप्रद एवं इहलोक एवं परलोक दोनों को सजाने-संवारने सुधारने के साथ-साथ जीवन को सार्थकता प्रदान करने वाला कार्य प्रतीत होता है। सबसे विशेष बात ये हुई कि अति अल्पकाल में ही ये गागर सागर में परिणीत हो गया, इस कार्य के वर्तमान स्वरुप में किसी शायर की ये उक्ति यथार्थ होती नजर आती है **'घर से अकेले चले थे, लोग मिलते गये, काफिला बनता गया'**। आज इस काफिले में 126 देशों में 11 भाषायें एवं हजारों कार्यकर्ताओं के साथ अनेक विभाग खड़े हो गये हैं जैसे - एडमिशन विभाग, लेखन एवं प्रकाशन विभाग, प्रशिक्षक मैनेजमेंट, तकनीकी सहायक मैनेजमेंट, समूह संचालक मैनेजमेंट, टेली हेल्पलाइन, परीक्षा विभाग, प्रशिक्षक प्रशिक्षण विभाग, प्रूफरीडिंग विभाग, क्लास मॉनिटरिंग विभाग, आई. टी. विभाग, विवेचन विभाग, लीगल डिपार्टमेंट, बैच संचालक विभाग, गीता प्रचारक विभाग, ग्राफ़िक एवं एनीमेशन विभाग, सर्टिफिकेशन विभाग, फॉरवर्डिंग विभाग, ऑब्जरवेशन एवं फीडबैक विभाग, सोशल मीडिया विभाग, रचनात्मक लेखन विभाग आदि।

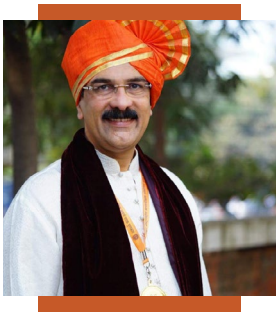
अब जब इस मंगल कार्य में ईश्वर की कृपा साक्षात् दिख रही है तो हम भी अपनी झोली छोटी क्यों रखें, अब तो अपने आगंन में अखिल विश्व चाहिये, हमारा गीता परिवार 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के घोष को जीवन्त करके दिखाये, इस ध्येय के साथ आगे बढ़ते जायेंगे। स्वामी जी महाराज के वचन **'हर घर गीता, हर कर गीता'** को हम समस्त विश्व में सत्य चरितार्थ करेंगे।

अभी ये द्वितीय अंक ही है। प्रथम अंक के बाद हमें पाठकों की अनेक प्रतिक्रियायें मिली, सुझाव भी मिले। हमने कुछ नवीन सामग्री भी सम्मिलित की है जैसे क्रॉसवर्ड, आगामी कार्यक्रम सूची, दिसम्बर माह तक हुए सभी गीताव्रतियों की सूची एवं अंग्रेजी भाषा के कुछ लेख इत्यादि। सुधार एवं प्रगति की प्रक्रिया निरन्तर चलने वाला पथ है, हम विश्वास दिलाते हैं कि गीतामैत्री प्रेय एवं श्रेय दोनों वर प्रदान करने वाली सरस्वती बनेगी। प.पू. स्वामीजी के मंगल आशीर्वाद एवं हजारों निष्काम कर्मयोगियों का नित्य निरन्तर सहयोग एवं भगवान श्रीकृष्ण की अहेतु की कृपा गीतामैत्री को घर-घर तक पँहुचायेगी।

आप अपने विचार ईमेल द्वारा newsletter.geetamaitri@gmail.com पर प्रेषित करें। आपकी सामग्री, आपके सुझावों एवं प्रतिक्रिया की हमें प्रतीक्षा रहेगी। श्रेष्ठ सुझावों, प्रतिक्रियाओं एवं लेखों को अगले अंक में सम्मिलित किया जायेगा।

- डॉ. आशू गोयल

समत्व की साधना



गीता के दूसरे अध्याय में योग की व्याख्या कही गयी -'समत्त्वं योग उच्यते'! समत्व ही योग है। आगे अन्यान्य श्लोकों मे समत्व की बात करते समय भगवान ने कहा सुख-दुःख, शीत-उष्ण, मान-अपमान, निन्दा- स्तुति, ऐसी सभी परिस्थितियों में हमें अपने आप को समत्व भाव में रखना होगा। शत्रु और मित्र तथा पत्थर और सोना भी समान लगे ऐसी मनोदशा बनानी होगी। ऐसी मनोदशा अभ्यास से बन सकती हैं यह भी भगवान ने बताया। छठें अध्याय में आत्मसंयमय के सूत्र बताते समय यह भी कहा की शरीर का समत्व कैसे साधना है? फिर श्वासोच्छ्वास का समत्व कैसे साधे यह भी बताया।

गीता संथा कक्षा का महायज्ञ चला तो प्रतिदिन हजारो स्वयंसेवक कार्यकर्ता बंधु - भगिनी प्रशिक्षक अथवा तकनिकि कार्य के लिए गीता सेवी बनें। निरपेक्ष भाव से प्रतिदिन लगभग एक हजार ज़ूम कक्षाएँ चलने लगी। किसी भी प्रकार के सम्मान की अपेक्षा के बिना, ये सारे गीता सेवी अपने कार्य में जुड़ गयें। प्रशिक्षण अथवा अन्य कार्य करते समय हर परिस्थिति में धैर्य रखते हुए ये सारे कार्यरत हैं। अनायास ही "अनपेक्षः शुचिर्दक्ष उदासीनो गतव्यथः" का भाव इनके मन में प्रतिष्ठित होता चला गया। सभी गीता साधकों के साथ समान व्यवहार करते समय क्रोध को वश में करना, ये सीखते चले गये। थंड और गर्मी में भी कक्षा का समय पालन इन्होनें सीखा। ज़ूम कक्षा में सिखाते समय घंटा भर सीधे बैठने का अभ्यास होता गया। पूरा ध्यान प्रशिक्षण में लगाकर ये सब 'समं कायशिरोग्रीवं धारयन्नचलमं स्थिरः' का प्रयास करते रहे। गीताजी के श्लोक सिखाते समय जब हम छंदबद्ध पद्धति से श्लोक पढ़ते हैं तब अपने आप श्वासोच्छ्वास की गति सम हो जाती है। 'प्राणापानौ समौ कृत्वा' इस महाविधा का अनायास अभ्यास गीता प्रशिक्षकों का होता रहा।

इस उपक्रम का लाभ लेते लेते 'संतुष्टः सततं योगी' इस गीता वचन की अनुभूति गीता सेवियों को होने लगती हैं। इस अनुपम श्रीकृष्ण सेवा का असीम आनंद हर व्यक्ति को होता है। दिन भर के कार्य-कलाप गीता कक्षा के इर्द-गिर्द घूमने लगते हैं। 'मामनुस्मर युध्य च' इस गीतोक्ति के अनुसार हर क्षण गीता का स्मरण मन में रहता हैं। 'सततं कीर्तयन्तो मां' की प्रत्यक्ष अनुभूति होती रहती हैं, मन में सदैव "गीता गुञ्जन" चलता रहता है। इन सभी बातों का परिणाम आत्मस्थिति बदलने में होता हैं, आत्म-स्थिति में बदलाव के साथ-साथ मनोस्थिति बदलने लगती है। और मनःस्थिति के बदलते ही परिस्थिति बदल जाती है। ऐसा अद्भुत अनुभव अनेक गीता सेवियों ने प्राप्त किया।

घर में सुख-दुःख की घड़ी हो अथवा करोना के काल में कोई अस्पताल में भर्ती हो तब भी इन कर्मठ स्वयंसेवकों ने अपनी सेवाएँ प्रदान की और गीता का कर्मयोग जीवन में अपनाया। इससे बढ़कर कोई साधना नहीं, अन्य कोई उपासना नहीं। ऐसे सारे कर्मयोगी भक्तों को सादर नमन !

- डॉ. संजय मालपाणी

Be a Geeta Volunteer

19th December, 2021
https://youtu.be/fc1XLJyRFC8

All Geeta Pariwar programs are run by selfless Geeta Sevi volunteers. Every month there are new participants joining us and new batches that get started. For the smooth functioning of these sessions we host the Come let us be a Geeta Sevi session from time to time. An online session was held on the 19th December 2021, as a part of the Come let us be a Geeta Sevi program chain. The program stated with an auspicious prayer. The National Vice President of the Geeta Santha classes , Dr Ashu Goyal started his address with the Shlok no 3.21:

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥

The Conduct or behaviour of great people is followed by others. The example or manifestation displayed by such great people, is followed by the entire mankind. He further added that it is the founder of Geeta Pariwar, Param Pujya Swami Govindadev Giriji Maharaj, who inspired this great Gītā Knowledge Yajña, in which thousands of devotees are offering their services. We all need to offer our services as per our individual capacity. Becoming a Geeta sevi is like helping in the drawing of the grand chariot of Bhagavān Jagganāth. We all should join our hands in this divine task. Shrī Pradeepji Rathi, who is contributing tirelessly in his capacity as Head of the IT department at Geeta Pariwar, shared the several efforts put in by all. He said that currently there are more than 35 Teams working with tremendous determination in the background. He further explained how to register in order to offer your services.

The various department representatives then shared the details about the work in their area via a presentation or a video. The eligibility criteria like age and qualifications required to join the respective teams was shared in great details. The following representatives shared their presentations –

Technical Department: Vijayaji Muchhal.
Software Development: Meenakshiji Shah.

Group Coordinators: Viniji Maheshwari.
Creative Writing: Arvindji Patil.
Trainer Department: Shrutiji Kadagaonkar
Other Special Interests: Dr Manish Singhji Tomar
Geeta Prachārak: Anjaliji Joshi.

All participants were informed that registration is available on sewa.learngeeta.com. If you want to volunteer in multiple areas then you have to fill a different form for each department. After registration the respective Department representatives will contact you for guidance on the next steps.

There was a Question and Answer session, and then the program ended with a prayer. Similarly there was a program held on October 31st, the details of which are as follows-

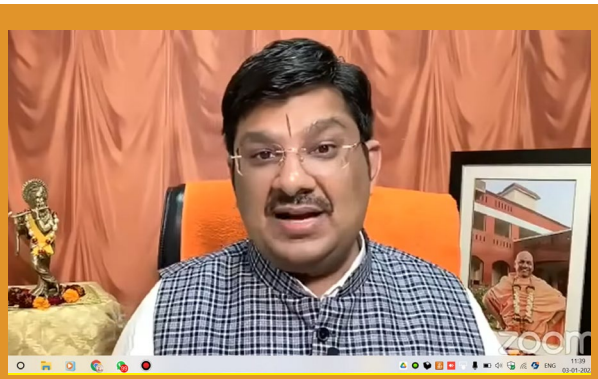
Come let us be a Geeta Sevi- 31st October, 2021

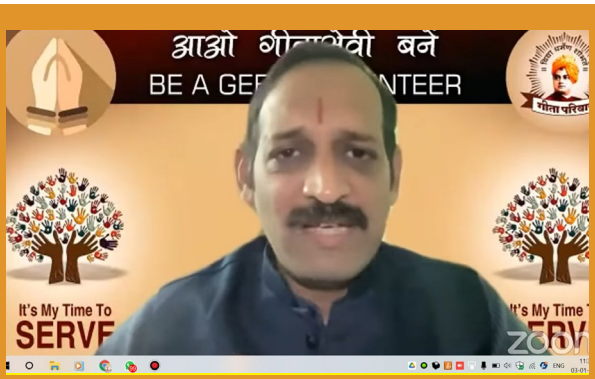
https://youtu.be/TZvQ4bnKvaU

Introduction of the Learngeeta program was given by Learngeeta IT Department Head Shri Pradeep Ji Rathi.

ALL DEPARTMENT PRESENTATIONS-

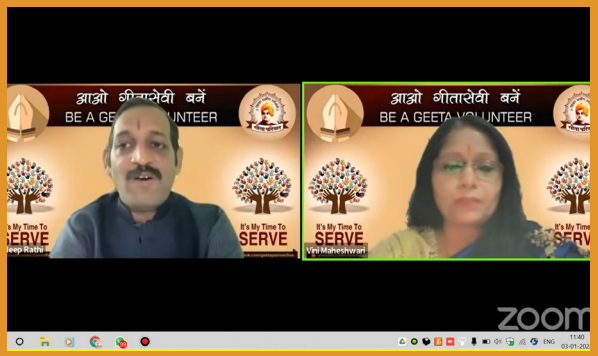
Technical Department- Surajji Sharma (UAE).
Creativi Writing - Ghanshyamji Das.
Software Department - Vedji Mathur.
Group Coordinator - Manish Singhji Tomar and Sarojji Saboo.
Trainer Department - Anitaji Ravishankar
Admissions Team - Punitaji Prasad.
Other Special Talents: Anshuji Garg
Geeta Prachārak - Vikasji Vaidya






Roles and Responsibilities


आओ गीतासेवी बनें
BE A GEETA VOLUNTEER

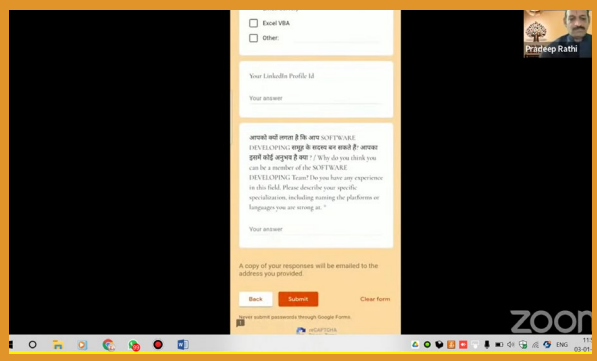

आओ गीतासेवी बनें
BE A GEETA VOLUNTEER

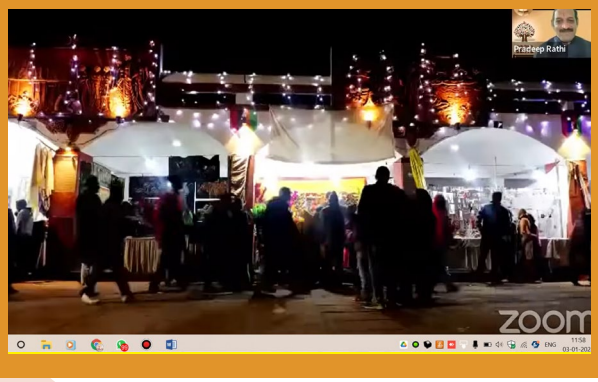

आओ गीतासेवी बने
BE A GEETA VOLUNTEER
LEARN GEETA
BE A TRAINER
प्रशिक्षक बनें
5
It's My Time To
SERVE


आओ गीतासेवी बनें
BE A GEETA VOLUNTEER


आओ गीतासेवी बनें
BE A GEETA VOLUNTEER


आओ गीतासेवी बनें
BE A GEETA VOLUNTEER


Excel VBA
Other:
Your LinkedIn Profile Id
Your answer
Back
Submit
Clear form


BE A GEETA VOLUNTEER


गीता परिवार
॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥
LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन
TOGETHER LET'S
STAND UNITED TO
SPREAD THE

1 नवम्बर, 2021 रमा एकादशी
https://youtu.be/56giRVP8rcE

अध्याय 13, 14, 15
प्रार्थना : श्रीमती निवेदिता शर्मा जी, जम्मू-कश्मीर
दीप प्रज्ज्वलन : मृदुला आसावा जी, पुणे

क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोगो नामक
13वेंअध्याय का पठन : गीताव्रती शिल्पाजी काबरा
चिंतन : वर्षा कासट जी, बीड

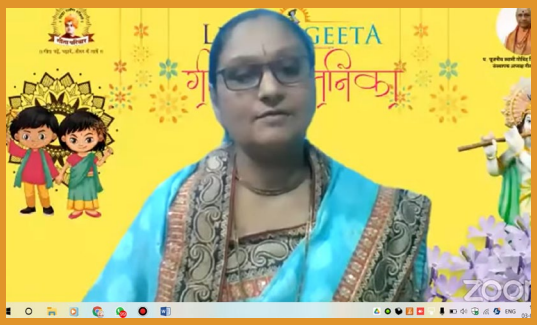
मुख्य बिन्दू:
हमारा शरीर क्षेत्र है और उसे भलीभाँति जाननेवाला क्षेत्रज्ञ।प्रथम अध्याय में वर्णित धर्मक्षेत्र व कुरुक्षेत्र वास्तव मै यह दैवी व आसुरी प्रवृत्तियाँ है। परमपिता परमात्मा में प्रवेश दिलानेवाली पुण्य प्रवृत्ति दैवी प्रवृत्ति का उत्थान देह में बढने पर शरीर धर्मक्षेत्र बन जाता है। आसुरी प्रवृत्ति के कारण बुराई के रास्ते पर चलकर नश्वर संसार को ही सबकुछ मानकर चलता है तब शरीर कुरुक्षेत्र बन जाता है।

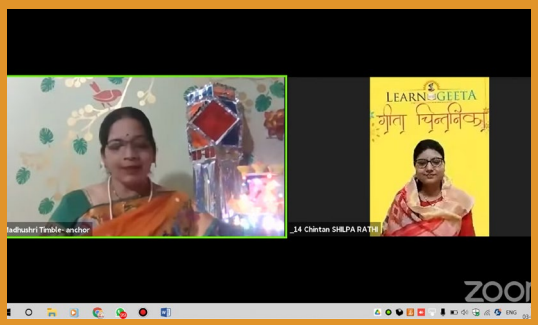
दैवी प्रवृत्ति का जब उत्थान होने लगता है व आसुरी प्रवृत्ति का दमन होने लगता है तथा भगवान के दर्शन की उत्कंठा उत्पन्न होती है तथापि देह का विस्मरण होने लगता है तब परमात्मा में विलय होने की प्रक्रिया शुरु होती है।

भगवान कहते हैं कि मनुष्य जीवन का अंतिम सत्य मोक्ष है।कुछ लोग ध्यान एकाग्र कर ध्यान योग द्वारा, कुछ प्रखर बुद्धि से ज्ञान योग द्वारा, कुछ लोग कर्म में फल में आसक्ति ना रखकर कर्म साधना द्वारा, कुछ श्रद्धा से भक्ति द्वारा भगवान को हृदयमें धारण करते है।भगवान सजीव निर्जीव में समभाव से स्थित है। जीवात्मा और परमात्मा की एकरूपता को ज्ञान की पराकाष्ठा कहा गया है।









श्रद्धात्रयविभागयोग
नामक 17वें अध्याय का पठन - यथार्थ ढालकरी जी, मानवत
चिंतन: गीताव्रती रश्मी करवा जी

मुख्य बिन्दू –
सात्विक मनुष्य देवताओं का, राजसी मनुष्य राक्षसों का, तथा तामसी भूत- प्रेतगणों का पूजन करते है। आयु,सत्व, गुण, बल, आरोग्य बढाने वाले स्निग्ध पदार्थ सात्विक मनुष्य को प्रिय लगते हैं, अति कडवे, खट्टे, तीखे, नमकीन, गरम आहार राजसी मनुष्य को प्रिय लगते हैं एवं सड़ा हुआ, दुर्गन्धित, जूठा, बासी भोजन तामसी मनुष्य की प्रिय होते है। फलेच्छा रहित रहकर, शास्त्रविधि से नियन यज्ञ सात्विक, फलकी इच्छा रख एवं दिखावटी यज्ञ राजसी, शास्त्रविधि से हीन, बिना मंत्र, दक्षिणा से किया यज्ञ तामसी होता है।

देवता, ब्राम्हण, गुरूजनों का यथायोग्य पूजन, सत्य, स्वाध्याय, प्रिय, हितकारक भाषण वाणी का तप है शुद्ध, सौम्य, मन की निग्रहता प्रसन्न भाव यह मन सम्बंधी तप कहा गया है। शरीर, वाणी व मन का, परमश्रद्धा व फलेच्छा रहित भाव से किया गया तप सात्विक, सत्कार, मान, दिखावटी तप राजसी और हट के साथ, दूसरोंको कष्ट देनेवाला तप तामसी होता है।

सत्पात्र को दिया गया दान सात्विक, प्रत्युपकार, फल प्राप्ति के उद्देश्य से किया दान राजसी, और अयोग्य व अपात्र को दिया गया दान तामसी कहा गया है।

18वें अध्याय का पठन - ओमजी, जिंतूर
चिंतन : गीताव्रती श्री विजय कुलकर्णी जी

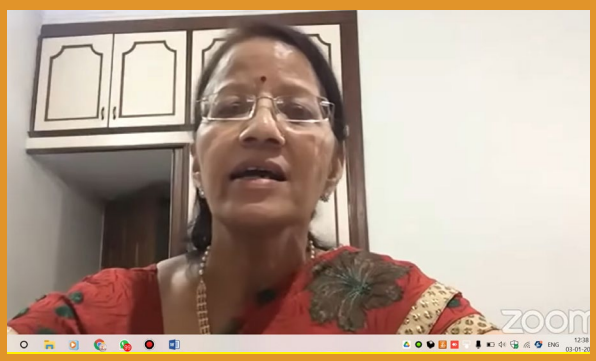
18वें अध्याय मे गीता समस्त अध्यायों का सार एवं उपसंहार है। जिस परमेश्वर से सम्पूर्ण प्राणियों की उत्पत्ति हुई है और जिससे यह समस्त जगत् व्याप्त है, उस परमेश्वर की अपने स्वाभाविक कर्मों द्वारा पूजा करके मनुष्य परम सिद्धि को प्राप्त हो जाता है। सब प्रकार से मान, बड़ाई और आसक्ति को त्यागकर एक परमात्मा को ही परम आश्रय, परम गति और सर्वस्व समझना तथा अनन्य भाव से अतिशय श्रद्धा, भक्ति और प्रेमपूर्वक निरंतर भगवान के नाम, गुण, प्रभाव और स्वरूप का चिंतन करते रहना एवं भगवान का भजन, स्मरण करते हुए ही उनके आज्ञा अनुसार कर्तव्य कर्मों का निःस्वार्थ भाव से केवल परमेश्वर के लिए आचरण करना यह 'सब प्रकार से परमात्मा के ही शरण' होना है।

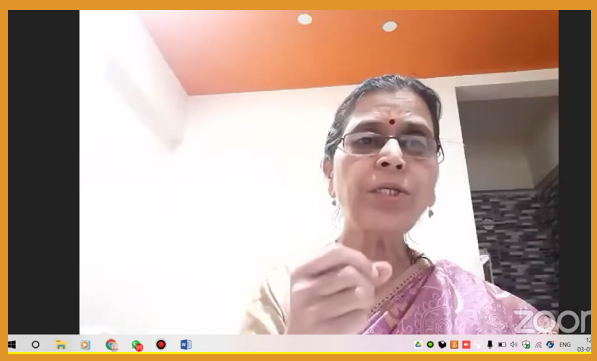
जो पुरुष मुझमें परम प्रेम करके इस परम रहस्ययुक्त गीताशास्त्र को मेरे भक्तों में कहेगा, वह मुझको ही प्राप्त होगा। उससे बढ़कर मेरा प्रिय कार्य करने वाला मनुष्यों में कोई भी नहीं है तथा पृथ्वीभर में उससे बढ़कर मेरा प्रिय दूसरा कोई भविष्य में होगा भी नहीं।

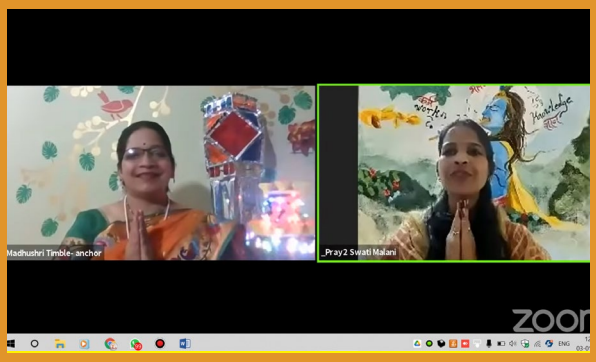
आ. आशू भैया द्वारा मौलिक मार्गदर्शन- श्रीमद्भगवद्गीता का दैनिक जीवन मे उपयोग किस प्रकार हम कर सकते हैं व भगवद्गीता हमारे जीवन में परिलक्षित हो रही है अथवा नहीं यह जानने हेतु आ. आशू भैया द्वारा विशेष अनुसन्धान प्रस्तुत किया गया।

1) शोक रहित जीवन।
2) विपरीत परिस्थितीयों में संयम 3) अक्रोधी, क्षमाशील स्वभाव
4) ध्यानमय जीवन
5) जपयज्ञ
6) अंतकाल में भगवद् स्मरण।
7) भगवत् चिंतनमय जीवन
8) सगुण भगवान की निरंतर अनुभूति।
9) हम जैसे भी है भगवद्प्राप्ति के अधिकारी है।
10) आओ भगवान को सर्वाधिक प्रिय हो जाए।

श्रीमद्भगवद्गीता जी की आरती विकासजी वैद्य, पुणे के करकमलों द्वारा संपन्न हुई।









5 नवंबर 2021

https://youtu.be/14L2w7KjvG8

कार्यक्रम का आरंभ प्रार्थना से निवेदिता जी शर्मा द्वारा किया गया। एवं मुख्य संदेश राष्ट्रीय उपाध्यक्ष गीता परिवार डॉ.आशूजी गोयल द्वारा दिया गया। दीपावली संदेश दक्षिणांचल प्रमुख, गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ. श्री हरिनारायणजी व्यास एवं दीपावली शुभकामना मध्यांचल प्रमुख आ प्रमिलाजी माहेश्वरी जी द्वारा प्रेषित की गयी।

इसके पश्चात् कुछ कार्यकर्ताओं की भी अभिव्यक्तियाँ ली गयी उसी में एक मनीष जी तोमर द्वारा प्रस्तुत कुछ पंक्तियाँ निम्न हैं –

पाठ करो तुम गीत मनोहर,
गान करो तुम गीत सरोवर
श्रेष्ठ गीत यह कृष्ण मुखी
करे सफल सर्वस्व सुखी
धेय बनाकर अर्पण कर दो।
गीतामय जीवन कर दो।

तत्पश्चात् प. पू. स्वामीजी का श्रवण सभी ने किया -

प. पू. स्वामीजी ने सभी कार्यकर्ताओं और स्वयंसेवियों का मार्गदर्शन किया। इस अवसर पर प. पू. स्वामी जी ने गीता परिवार, पुणे द्वारा प्रकाशित डॉ पराग सराफ की पुस्तक "मेक योर ब्रेन सुपरफास्ट" का विमोचन भी किया तथा पुस्तक के लेखक डॉ. पराग सराफ का अभिनंदन किया । प. पू. स्वामी जी ने यह सम्बोधन पुणे से दिया । प. पू. स्वामी जी के सम्बोधन के समय गीता परिवार, पुणे के सदस्य उनकी आरती करने गये थे, परंतु प. पू. स्वामी जी ने कहा, " मैं भगवान की आरती छोड़कर इस स्थान पर आया हूं । अन्य सभी कार्यक्रम खत्म हो गए हैं और केवल आरती होनी बाकी है। मैंने साधकों से कहा, कि आप आरती करें, मैं गीता परिवार के कार्यकर्ताओं की आरती उतारने के लिए जाता हूं। वास्तविक दीपावली आप मना रहे हैं। हमारे आसपास (कार्यकर्ता रूप में) कई दीपक जगमगा रहे हैं, वे सब श्रेष्ठ हैं क्योंकि वे अंधेरे से संघर्ष कर रहे हैं; घने अंधकार को नष्ट कर रहे हैं।" प. पू. स्वामी जी के कार्यकर्ताओं के प्रति यह उद्गार गीता परिवार के कार्यकर्ताओं के प्रति उनके अपार स्नेह तथा प्रेम को प्रदर्शित करते हैं। इस अवसर पर प. पू. स्वामी जी ने अपनी एक कविता की दो पंक्तियां कहीं :

अगणित दीप जलेंगे ऐसे, तमस सभी ये भागेगा।
पौरुष की आहुति से भाग्य राष्ट्र का जागेगा।

स्वयंसेवकों के प्रति अपना स्नेह भाव प्रकट करते हुए प. पू. स्वामी जी ने आगे कहा, "अपने राष्ट्र के भाग्य को जागृत करने के लिए जिस प्रकार के आत्मिक प्रदीपों की आवश्यकता होती है, वह मुझे गीता परिवार के स्वयंसेवकों में दिखती है। मुझे पता है कि गीता परिवार के लिए काम करने में कितनी असुविधाएं होती हैं। क्या क्या व्यवस्थाएं करनी होती हैं और ये सारे कार्य हमारे कार्यकर्ता किसी अपेक्षा के बिना सेवा के रूप में करते हैं। यह देखकर मन भावविभोर होता है। आपको थोड़ा विचित्र लगा होगा जब मैंने कहा कि मैं भगवान की आरती छोड़कर आप लोगों की आरती उतारने आया हूं। परंतु मेरा यह विश्वास है कि भगवान इससे अधिक प्रसन्न होंगे । श्रीमदभगवद्गीता में प्रभु ने स्वयं कहा है, 'मैं अपने भक्तों की पूजा करने वाले से प्रेम करता हूं।' आप सभी कार्यकर्ता जो गीता परिवार के विभिन्न स्तरों से जुड़े हुए हैं, दिन-रात सेवा कर भगवान की ही पूजा कर रहे हैं । अतः मैं स्वयं आज आपको सम्मानित करना चाहता हूं और इसी कारण मैंने आपकी आरती उतारने का उल्लेख किया है।"

गीता परिवार के विभिन्न उपक्रम तथा 'लर्नगीता' कार्यक्रम के संदर्भ में प. पू. स्वामी जी ने कहा कि "हमारा अंधकार से संघर्ष करते रहना अत्यंत आवश्यक है। आज हम सबने यह देखा कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भगवान केदारनाथ के सान्निध्य में भगवान आदि शंकराचार्य महाराज की प्रतिमा का, मूर्ति का अनावरण एवं लोकार्पण किया है। केदारनाथ धाम में यह कार्य करने का उद्देश्य है कि भगवान शंकराचार्य महाराज एक ज्योति के रूप में रहें, वह ज्योति आज भी प्रज्वलित है। यह ज्योति केवल धर्म के आधार पर प्रज्वलित है। उन पांच सूत्रों को स्मरण करते रहें जिनको हमने स्वीकार किया है। ये पांच सूत्र अत्यंत महत्वपूर्ण हैं एवं ये इस ज्योति को प्रज्वलित रखेंगे। निश्चित ही हमारे कार्यकर्ता आने वाली पीढ़ियों के लिए आदर्श होंगे।"

अपने दीपावली संदेश के लिए प. पू. स्वामी जी ने एक अत्यंत सुंदर कविता की रचना की थी, जो उन्होंने इस अवसर पर पढ़ी:

'प्राण ही बाती है, शरीर परोपकारी दीपक है,
तरल स्नेही सात्विक मन तेल है ।।
निज विवेक की ज्योति जगाए, अपने भीतर दिया जलाए ।।
दीपावली का हर्ष बढ़ाने क्या उपहार विश्व को देंगे,
रोज दीपावली होगी जब हम स्वयं श्रेष्ठ उपहार बनेंगे ।।





सभी स्वयंसेवकों एवं कार्यकर्ताओं को प. पू. स्वामी जी ने एक अत्यंत ओजस्वी और प्रेरणादायी संदेश दिया। आप कहते है, " हमें स्वयं उपहार बनकर विश्व को समर्पित हो जाना चाहिए । मेरे सभी कार्यकर्ता यही कार्य कर रहे हैं। हम सब एक स्वप्न लेकर यात्रा कर रहे हैं और स्मरण रहे कि गीता के प्रचार-प्रसार का यह स्वप्न सबसे उत्तम स्वप्न है। यह हमारे धर्म, राष्ट्र,मानवता को एकत्रित करता है और सबका कल्याण करता है। ऐसा विश्व में दूसरा कोई केंद्र नहीं है। यह केंद्र केवल गीता, गीता और गीता है । इसलिए गीता की भक्ति करते रहें, गीता को प्रेम करते रहें, गीता को पढ़ते रहें, गीता को पढ़ाते रहें, गीता का प्रचार करें। यदि यह हमारे जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य बन जाए, यदि यह एकमात्र लक्ष्य बन जाए, तो आपके अंतर में गीता की ज्योति जग जाएगी । इससे आप आत्मज्योति बनकर केवल दीपक के रूप में नहीं तो दीप स्तंभ के रूप में अपने आसपास के लोगों को प्रकाश दे सकेंगे ।"

'लर्नगीता' उपक्रम को मिल रहे अभूतपूर्व प्रतिसाद एवं उसे सफल बनाने मे लगे सभी कार्यकर्ताओं का विशेष उल्लेख करते हुए प. पू. स्वामी जी ने कहा, " मैं अभिभूत हूं कि आज लाखों लोग गीता परिवार से जुड़कर गीता का अध्ययन कर रहे हैं और हजारों कार्यकर्ता, तन मन धन के साथ इस कार्य में स्वयं को अर्पित कर रहे हैं। मैं आप सभी का अभिनंदन करता हूं। यह दीपावली आपके लिए सुखमय हो, प्रकाशमय हो, प्रेरणादायक हो और मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि आपका आने वाला कार्य अधिक गति से और अधिक प्रमाण में हो। जिस तरह आज अयोध्या जगमगाती है तो पूर्ण विश्व देखता है, उसी तरह पूरी दुनिया की सच्ची दीपावली तब मनाई जाएगी, जब पूर्ण वातावरण भगवद्गीता के सिद्धांतों से भर जाएगा।"

प. पू. स्वामी जी मुखारविंद से निकले इस प्रेरणादायी संबोधन से उपस्थित सभी स्वयंसेवक तथा कार्यकर्ता गीता प्रचार-प्रसार के अपने स्वीकृत कार्य के लिए प्रेरित एवं दृढ़संकल्पित हो गए। दीपावली के शुभ अवसर पर मिले इस अमूल्य उपहार से सभी उपस्थित कृतकृत्य हुए।

अंत मे समापन प्रार्थना श्रीमती निवेदिता जी के द्वारा की गई एवं कार्यक्रम को सम्पन्न किया गया।



Welcome Ceremony - Nov L3, 6th batch

10 November 2021 https://youtu.be/vRgGlgHhFaE

A magnificent welcome ceremony marked the auspicious beginning of the 6th batch of Geeta class Level-3, on 10th November 2021. In this batch almost 10,000 sadhaks took admission. The program was inaugurated with prayers and lighting of the auspicious lamp. Ms. Pooja Gupta from Malaysia said the prayers, and Mr. Arun Tapadia from Lakhimpur, lit the holy lamp. Dr. Ashu Goyal, National Vice President Geeta Pariwar and Program Director online Geeta Santha, in his inaugural speech said that in the previous 18 months, November 2021 was the most unique month. This month marked the initiation of new batches in all levels L1, L2, L3, L4.

He invoked all the new sadhaks to resolve in the name of Gurudakshina, to inspire atleast 10 new sadhaks to join the forthcoming L1 batch of Geeta Santha cleasses. In this context he gave reference of the 68th and 69th shloka of the 18th Adhaya of the BhagawadGītā, wherein Shri Krishna says :

य इमं परमं गुह्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति।
भक्तिं मयि परां कृत्वा मामेवैष्यत्यसंशयः॥18.68॥

न च तस्मान्मनुष्येषु कश्चिन्मे प्रियकृत्तमः।
भविता न च मे तस्मादन्यः प्रियतरो भुवि॥18.69॥

Meaning:
those with complete devotion to Me teach this most confidential knowledge of the Geetashastra amongst my devotees, perform the greatest act of love towards Me. No human being does more loving service to Me than him making him most dear to Me on this earth.

Respected Ashu Bhaiya said with the blessings of Geeta Mata and Swami ji we should gradually move forward on this righteous path in order to enrich our lives.

क्षणशः कणशश्चैव विद्यामर्थं च साधयेत् ।
क्षणे नष्टे कुतो विद्या कणे नष्टे कुतो धनम् ॥

Meaning:
Just like one should educate oneself without wasting even a second and save every penny to accumulate wealth, similarly these sadhaks have made good productive use of their time. They have qualified Gītā Jijñāsu, Gītā Pāṭhak, Gītā Pathik examinations by memorising all the Adhyayas of Geeta. On this occasion some Geeta sadhaks showcased their skills of memorising Shrīmad Bhagavad Gītā and also shared their experiences. They also expressed how without any knowledge of the sanskrit language, they are now able to read the shlokas with correct pronunciation only through training and the PDF of the Adhyayas sent by Geeta Pariwar.

It is a matter of happiness that in these sessions, with one anothers inspiration grand parents, couples, families living abroad all have joined Geeta Pariwar, and, they are experiencing gratitute in themselves. Ms Radhika Tarapuri from Germany, ended the session with prayers.



Welcome Ceremony - Nov L3, 6th batch

https://youtu.be/ONOIFKE3ltM

Session was started with Opening prayer done by Sharvari Krishna Parab from Oman & **Deep Prajjwalan by was done by** Shri. Suraj Sharma Ji from UAE.

Some participants also gave demonstration of Bhagvadgeeta in the program.

Bhagavadgītā Pratyakshik –

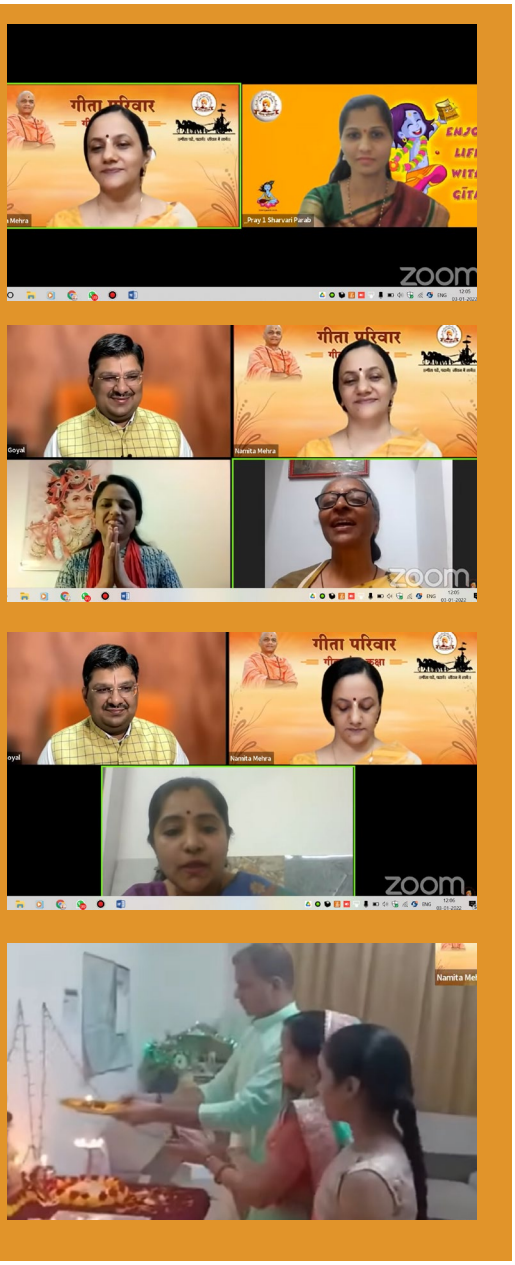
1. Kiran Nagar, Boston USA
Age - 42
Examiner - Janhvi Kelkar

2. Zeal Innani, Mumbai
Age - 8 Examiner - Manisha Bardhan

3. Anuja Pinghle, Kopergaon
Age - 60
Examiner - Smita Namjoshi

4. Kashmira Upadhyay, Andheri
Age - 69
Examiner - Pragati Bhavsar

After experience sharing session Vote of thanks was given by Smt. Manisha Bhardwaj Ji and session was colcluded with closing Prayer by Pratima Pandey Ji from Canada.



Welcome Ceremony - Nov L4, 3rd batch

15th November 2021 https://youtu.be/CCtZppDg9vk

The third batch of Geeta Class Level-4 began with a grand welcome ceremony on 15 November 2021. About 8000 members joined this new batch. The program started with prayer and lighting of the lamp by Ms. Anuradha Ji Vaidishwar, who is from Malaysia, and Ms. Anita Ji Kulkarni, a resident of Pune, lit the lamp.

Inauguration of the program was performed by, Dr. Ashu ji Goel, (National Vice President, Geeta Pariwar and Program Director of Online Geeta Santha) he said, "Ja par kripa ram ki hoi, ta par kripa karhi sab koi. It's God's compassion on us that all of you can reach level 4". He said that P. P. Swamiji's 'Geeta Padhe, Padhaye, Jiwan me laaye' should resonate now. He asked us to become Geeta volunteer, to become Geeta Pracharaks to deliver the message Ghar Ghar Geeta; Har Kar Geeta to every doorstep.

He said, by purifying our internal demonic dispositions, we have to amass spiritual excellence and by partaking in this divine work, we can become very dear to God.

After this passionate, enthusiastic, and inspirational speech, the Sadhak who got by heart the Geeta Ji directed a few verses from different chapters by the examiner's and the trainees were introduced to their cultivated proficiency by reciting the complete 2 verses clearly and accurately. This direct orientation was very inspiring for the aspirants who want to appear for various examinations. Many Sadhak also delivered their experiences about their Geeta journey up to level 4 and while sharing their mind, they said...

• The individuality of the online Geeta class is was promising. With this, the sadhak from the age of 7 to 85 years can learn the pronunciation of shlokas very easily.

• Many highly educated sadhak from many countries across the globe are providing services in different faculties of the Geeta Pariwar while attaining from level 1 to level 4.

• Sadhaks are experiencing the grace of the Supreme Lord by undergoing optimistic energy, immense harmony in their vitalities even in times of mishap.

• By comprehending the meanings of the chapters in the Arth-Vivechan session, the Sadhak's are getting ready to really carry out the life system contained with the Geeta.

• 88 years old sadhak Sindhu Kakiji who learns the verses of Geeta Ji with great enthusiasm every day said that the light of Geetaji is surging within her and the Geeta Pariwar has given her a treasure in the form of ShrīmadBhagavadGītā. She will go to meet Lord Krishna only with that treasure. The Geeta Pariwar gave her love, respect. Even at this stage of time, she considers herself dynamic and energetic. Now she is thinking of giving the Gītā Pāṭhak exam.

• At the end of the program, Ms. Namita Ji Mehra, a resident of Mumbai, thanked everyone, and Mr. Megh Ji Thakurdesai, who was associated with the OGC from Canada, recited the closing prayer.



गीता जयन्ती उत्सव

14 दिसम्बर, 2021 https://youtu.be/oTQ7pmh7v8U

गीता परिवार द्वारा प. पू स्वामीजी श्रीगोविन्ददेव गिरि जी महाराज, संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार तथा आचार्य श्री पुण्डरीक गोस्वामीजी महाराज के पावन सान्निध्य में 5159वां गीता जयंती उत्सव, मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी,संवत् 2078 तदनुसार 14 दिसंबर 2021 को बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाया गया।

भारतीय परंपरा का निर्वाहन करते हुए मंगलाचरण प्रार्थना से कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुअष्टकम स्तोत्र के संगीतमय पठन, गीता जी पर आधारित शास्त्रीय नृत्य नाटिका व योग प्रदर्शन के साथ हुआ।

गीता परिवार के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ संजय जी मालपाणी द्वारा परम श्रद्धेय स्वामीजी श्री गोविन्ददेव गिरि जी महाराज व परम आदरणीय आचार्य श्री पुण्डरीक गोस्वामीजी महाराज के श्री चरणों में प्रणिपात करते हुए कहा कि आ.स्वामीजी ने श्रीमद्भगवद्गीता रूपी पारसमणि हमें सौंप कर हमारा जीवन स्वर्णिम बना दिया है। उन्होंने कहा कि 2 वर्ष पूर्व संगमनेर में संपन्न हुए गीता जयंती महोत्सव में 35000 बच्चों द्वारा और अन्य साधकों द्वारा गीता जी के 12वें व 15वें अध्याय का सस्वर पाठ किया गया था तथा प.पू स्वामीजी के 71वें जन्मदिवस पर 71,000 पाठ करके उनको मंगलकामनाएं अर्पित की थीं।

आ.संजय भैय्या द्वारा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ.आशू जी गोयल, गीता चिन्तनिका प्रमुख, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, श्री हरिनारायण जी व्यास, श्री गोविंद जी माहेश्वरी, श्रीमती प्रमिला जी माहेश्वरी, कलकत्ता से संदीप जी सोमाणी, सभी उपाध्यक्षों व आंचल प्रमुख, गीता परिवार राष्ट्रीय कार्यकारिणी, संथा वर्ग कार्यकर्ताओं, गीता सेवियों, लाखों साधकों का अभिनंदन किया।

गीता परिवार की गतिविधियों की सामान्य जानकारी देते हुए दक्षिणांचल प्रमुख, गीता चिन्तनिका प्रमुख, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हरिनारायण जी व्यास द्वारा बताया गया कि इस समय गीता परिवार द्वारा 117 देशों में गीता शिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं । प्रतिदिन 5000 कार्यकर्ता, 956 जूम वर्ग से 300000 साधक लाभान्वित हो रहे हैं। सतत प्रयासों से प्रतिमाह 30 से 40 हजार साधक अगले स्तर पर प्रशिक्षण हेतु जुड़ते हैं। समय समय पर साधकों को अनेक वन्दनीय संत महात्माओं का आशीर्वाद भी मिलता रहता है।

इस अवसर पर प. पू स्वामीजी ने कहा कि गीता परिवार का वैनतेय अपने दो पंखों के साथ यानि भगवद्गीता और भारत माता इन पंखों के संग जीवन के अंतिम लक्ष्य यानि मानव कल्याण के लिए निर्बाध गति से चल रहा है। स्वामी जी ने कहा कि हमें अध्यात्म प्रवण उर्जा को राष्ट्रभक्ति का आयाम और राष्ट्रभक्ति की वाणी, कण्ठ व हृदय में भगवद्गीताके श्लोकों के बीच सामंजस्य स्थापित कर मानवता के कल्याण की ओर अग्रसर होना होगा।

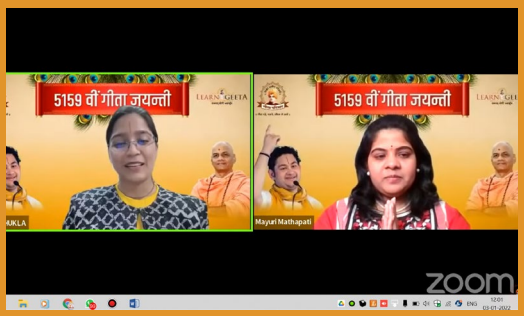
जीवन का कोई भी सेवा कार्य अध्यात्म का अनुष्ठान लिए बिना, अंत तक बिना थके, बिना रुके पूर्ण नहीं होता। अध्यात्म का कार्य जब तक सेवा में परिणित नहीं होता तब तक व्यावहारिक स्तर पर दिखाई नहीं देता है।हम अपने प्यारे भारतवर्ष को यही कहें, जैसे वनवास मे निराश पांडवों से मिलने गए भगवान श्री कृष्ण ने कहा था -मैं तुम्हारा हूँ, तुम्हारे साथ हूँ।आपका विरोधी मेरा विरोधी और आपका सहयोगी मेरा सहयोगी।वैसे ही हम अपने प्यारे भारतवर्ष को यही कहें कि मैं स्वयं, मेरा तन,मन,धन तुम्हें समर्पित है। आपकी परंपराओं का सम्मान करने वाला जो भी होगा उसे मैं मित्र मानूँगा जो सम्मान नहीं करेगा उसे विरोधी मानूंगा।

हम सब अध्यात्मिक उर्जा संग राष्ट्रभक्ति की अलख जगाएं। श्रीमद्भगवद्गीता का नित्य अमृतपान करके स्वयं के साथ ही साथ अखिल विश्व में मानव जाति का कल्याण करें।

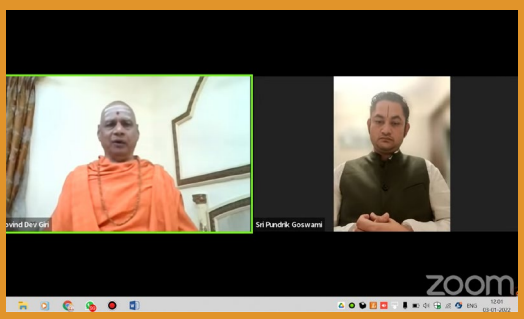
गीता प्रवीण सुश्री कविता वर्मा द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता कंठस्थीकरण की गीता जिज्ञासु, गीता पाठक, गीता पथिक, गीताव्रती सभी परीक्षाएं उत्तीर्ण साधकों के शुद्ध उच्चारण सहित गीता जी के श्लोकों के पठन का अद्भुत,प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आ. आशू भैय्या ने कहा कि हर माह 4000- 5000 प्रशिक्षार्थी, गीता जी के 3, 6, 12, 18 अध्याय, कण्ठस्थीकरण की परीक्षाएं देते हैं,उत्तीर्ण होते हैं। अब तक लगभग 10,000 प्रमाण पत्र प्रदान किए गए । 70, 000 से भी ज्यादा प्रमाण पत्र 12वें व 15वें अध्याय के शुद्ध पठन के लिए दिए जा चुके हैं ।

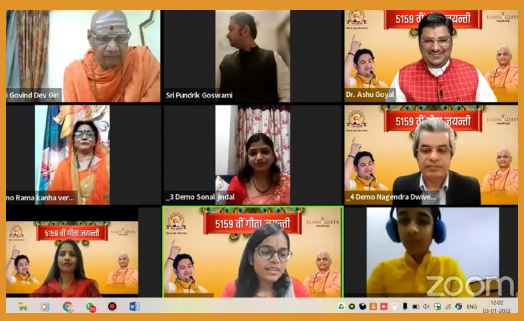
संगमनेर से आ. सुवर्णा जी मालपाणी व उनकी सहयोगीयों द्वारा 12वें अध्याय का सुस्वर पाठ किया गया।

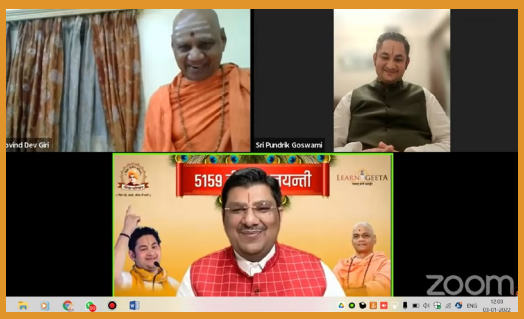
कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूज्य श्री पुण्डरीक गोस्वामी जी महाराज ने अपने भावप्रवण उद्बोधन में कहा कि संसार रूपी भवसागर में तैरना वही सीख सकता है जिसने गीता जी का आश्रय लिया। जीवन के हर परिवेश का समाधान गीताजी के सूत्रों में निहित है। युद्ध स्थल पर श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीतोपदेश दिया यानि विवाद के स्थल पर संवाद हुआ और अर्जुन अपने वैचारिक युद्ध से उपर उठे।





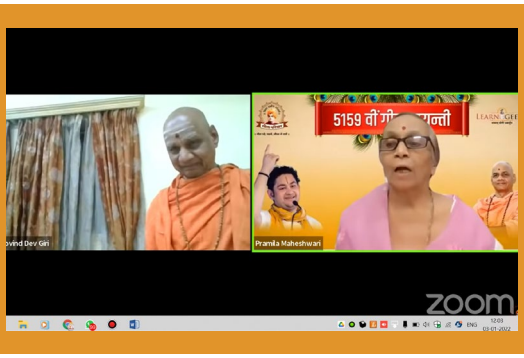






जीवन में भी भौतिक युद्ध से पहले वैचारिक युद्ध का सृजन होता है। ऐसे में सत्पुरुषों के साथ संवाद से समाधान प्राप्त होता है। रण में कृष्ण अर्जुन के रथ,रथ के अश्व,लगाम एवं सारथी स्वयं श्रीकृष्ण थे। अगर आधुनिक परिवेश में इसे देखा जाए तो कार के 4 प्रमुख भाग-बाह्य आवरण, इंजन, चालक, इंधन- इन चारों एक दूसरे का पूरक व समान स्तर पर गतिशील होते हैं तभी कार चलती है। इसी प्रकार से गीता जीवन को 4 आयामोंमें समान स्तर पर गतिमान रखती है। वह हैं कार्यकी गतिशीलता, विचारों की स्पष्टता, हृदय की पवित्रता, और आध्यात्मिकता। यह चारों एक समान रूप से क्रियाशील हों तो जीवन उर्जा से परिपूर्ण होता है। स्वामी जी ने कहा कि वंशी के सुर शब्द में परिवर्तित हुए तो जाकर गीता के श्लोकों में परिणित हुए। गीता के श्लोक जब स्वरों में अवस्थित हुए तब वे वंशी के निनाद के रुप मे प्रगट हुए। सुर ही वंशी है, शब्द ही गीता है। सुरब्रह्म, शब्दब्रह्म से युक्त परब्रह्म के मुख से अवतीर्ण हुई गीता पथ है। जब यह पाथेय भी बन जाए तभी जीवन का उद्धार हो सकता है ।

श्रीमद्भगवद्गीता जी की आरती, नेत्रसुखद व सुंदर नृत्य के साथ प्रस्तुत की गई ।
गीता परिवार की उपाध्यक्ष सुश्री प्रमिला जी माहेश्वरी ने धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया।





प्रचलित नववर्ष उत्सव 'मेरे राम'

https://www.facebook.com/geetaparivar/videos/3021088888221784/

31 दिसम्बर, 2021 को गीता परिवार द्वारा अपना 22वाँ प्रचलित नववर्ष उत्सव हर्षो-उल्लास सहित मनाया गया। इस ऑनलाइन उत्सव का शुभारंभ एक सुंदर नृत्य-नाटिका के साथ हुआ। गीता परिवार के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष डॉ0 आशू जी गोयल ने सभी का अभिवादन व स्वागत करते हुए परम पूज्य स्वामी श्री गोविंददेव गिरि जी से आग्रह किया कि वे अपने आशीर्वचन द्वारा शुभसन्देश से सभी को अनुगृहीत करें।

परम पूज्य स्वामी जी ने इस सुंदर समारोह में सहभागी होने पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि आज हनुमान जी की कृपा से हम सालासर धाम से जुड़े हैं,जहाँ से सालों पहले यह प्रचलित नववर्ष मनाना शुरू किया गया था। परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि पहले हम जनवरी से आरम्भ होने वाले साल को नूतन वर्ष नहीं मानते थे परन्तु अब जब प्रचलित धारणा अनुसार सर्वत्र नया साल 1 जनवरी से ही आरंभ हो रहा है, तो यह उत्सव श्रीभगवान व हनुमान जी का स्मरण करते हुए हनुमान चालीसा के 11 पाठ के साथ, नूतन वर्ष के मध्य रात्रि में प्रवेश करते हुए मनाते हैं। इसका सूत्रपात लखनऊ की पुण्यभूमि से हुआ था। तब इसका संयोजन व नेतृत्व स्वर्गीय श्री जगदीश जी जालान ने किया था, जिन्होंने अलग अलग महापुरुषों के वेश को प्रस्तुत कर नववर्ष उत्सव मनाया था। प.पू. स्वामी जी ने इन सारे प्रसंगों को याद करते हुए कहा कि मैं नववर्ष मनाने हेतु सशंकित मन से लखनऊ आया था । कार्यक्रम में हनुमान जी पर मंचित नाटक देख उन्हें हनुमान जी की भक्ति याद आई और कहा हमें भी हनुमान की तरह ही भक्ति करनी चाहिए; भक्ति करने का प्रयास करना चाहिए जिससे कि हमारे आसपास मांगल्य निर्माण हो सके।उन्होंने आगे यह भी बताया कि विज्ञजनों का मानना है कि मनुष्य को हर रोज़ अपने जीवन का अवलोकन करना चाहिए कि आज क्या अच्छा किया, क्या गलत किया है। हमें दैनिक, मासिक एवं वार्षिक तौर पर अपना अवलोकन करते रहना चाहिए। इस सिंहावलोकन से हम अपना आकलन कर सकेंगे और सीख सकेंगे। हमसे जो अच्छे कार्य हुए उन के लिए प्रभु के प्रति कृतज्ञ रहें और जो कुछ गलत हुआ उसके लिए संकल्प करें कि वह गलती दोहराई न जाए। साथ ही किसी और की गलती को भूल जाएं । सदा यह याद रखें कि; "Forgetting is much better than forgiving" यानि गलती को माफ़ करने से बड़ा है गलती को भूल जाना। इसी तरह हमसे जो भी कार्य हुआ उसे और अच्छा बनाने का प्रयास करें। सतत समीक्षा की आदत से हमारी अपलिफ्टिंग यानी उन्नति होती है, जो चाहकर भी पशु नहीं कर पाते। इसलिए परमात्मा द्वारा दिया गया "विवेक" ही मनुष्य के लिए सबसे बड़ा उपहार है। साथ ही स्वामी रामदास की बातों को याद कर प. पू. स्वामी जी ने बताया कि विवेक से ही हम अपनी गलतियों को सुधार सकते हैं।

प.पू.स्वामी जी ने आगे कहा गीता परिवार ने जो किया है; वह वंदनीय है। गीता परिवार द्वारा जो इतना बड़ा कार्य किया गया है उससे सारे विश्व; सारा संसार आश्चर्यचकित है। गीता परिवार ने अथक लगन व मेहनत से कार्य किया है, इसमें कोई दो राय नहीं है। कोई चाहे, न चाहे पर मानव स्वभावानुसार छोटी मोटी गलती तो

हो ही जाती है। साथ ही बताया कि नववर्ष उत्सव की सार्थकता इसी में है कि हम संकल्प करें कि हमसे आगे गलती न हो और गलतियों को सुधार अच्छे कार्य करते जाएं व दूसरे की गलतियों को भूल जाए। हमें अपने आप में यह क्षमता विकसित करनी है, तभी परमात्मा हमें उन्नति की ओर अवश्य ही ले जाएंगे। गीता परिवार ने इस मंच द्वारा हमें यह अवसर प्रदान किया है।

प.पू. स्वामी जी ने बताया कि आशू भैया विमान से उतरने के पहले हमेशा एक मैसेज भेजा करते हैं कि 'जरा मुस्कुराइये कि आप लखनऊ में हैं।' उनके इसी मैसेज को याद कर, स्वामी जी ने भी हमें संदेश दिया कि मुस्कुराइए कि आप गीता परिवार से जुड़े हुए हैं।

गीता परिवार हमें हँसते हँसते जीना सिखाता है। भगवान श्रीकृष्ण ने स्वयं मुस्कुराते हुए भगवद्गीता का उपदेश दिया है, हमें भी जीवन में सभी कार्य हँसते हुए करने चाहिए ताकि कोई भी कार्य, बोझ न लगे। इसी तरह गीता परिवार के कार्य करते रहें,गीता पढ़ते रहें,गीता को पढ़ाते रहें व गीता को जीवन में उतारें। गीता परिवार के समूह को साथ लेकर कार्य करते चले। गीता परिवार का कार्य भारत का भविष्य बनाने वाला कार्य है।

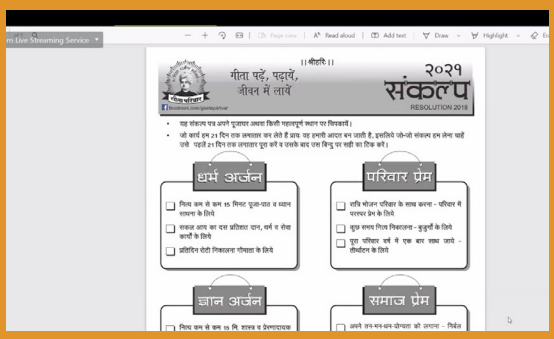
परम पूज्य स्वामी जी ने बताया कि जब वे सालासर पहुंचे तब देश के विभिन्न भागों से आए लोग उन्हें मिलते समय बताते थे 'मैं गीता परिवार से हूँ।' यह देखकर मैंने सोचा कि एक समय था जब मेरे नाम से गीता परिवार जाना जाता था और आज मैं गीता परिवार के नाम से मैं जाना जाता हूँ।

यह सब हनुमान जी की कृपा से ही हुआ है क्योंकि हनुमान जी के बिना गीता होती ही नहीं। कारण श्रीकृष्ण भगवद्गीता के वक्ता है, अर्जुन श्रोता हैं, परंतु हनुमान जी रथ के ध्वज पर सवार एक आदर्श पुरुष हैं। यह एक उदाहरण है कि गीता का अध्ययन करने वाला व्यक्ति कैसा होगा, हनुमान जी को गोस्वामीजी महाराज ने " सकलगुणनिधानं" का विशेषण देकर उनकी पूर्णता का परिचय करवाया। नववर्ष के इस अवसर पर हमें भी संकल्प करना चाहिए कि हनुमान जी की तरह आदर्श बनना है ।हम आदर्श तक पहुँचे या न पहुँचे,वह सोचे बिना हमें इसी आदर्श मार्ग पर चलना शुरू कर ही देना है। साथ ही इस रास्ते चलने का हमें संकल्प दिलाया। परम पूज्य स्वामी जी ने हर्षित हो कर सबको 'वर्चुअल लड्डू' का प्रसाद प्रदान किया और साथ ही विश्वास दिलाया कि अगर हम ऐसे ही सेवा करते रहेंगे तो निश्चित ही गीता परिवार एक ऐतिहासिक हस्ती बन जाएगा, जिसमें अब कोई भी संशय नहीं है।

अपनी वाणी को विराम देते हुए परम पूज्य स्वामी जी ने कहा कि वे हनुमान जी के चरणों में प्रार्थना करते हैं कि वे हमें, हम सबको यह शुभकार्य करने हेतु बल, बुद्धि व प्रेरणा प्रदान करें । यह प्रार्थना सफल हो, इसी शुभकामना व श्री हनुमान जी के जयघोष के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।


LIVE
on Custom Live Streaming Service
Swami Govind dev giri ji


on Custom Live Streaming Service


॥ श्रीहरि: ॥
गीता पढ़ें, पढ़ावें,
जीवन में लावें
२०२१
संकल्प
RESOLUTION 2018
धर्म अर्जन
परिवार प्रेम
ज्ञान अर्जन
समाज प्रेम















द्वाविंशतितम (22वाँ)
त नववर्ष उत्सव
विग्रहवान् धर्मः ॥











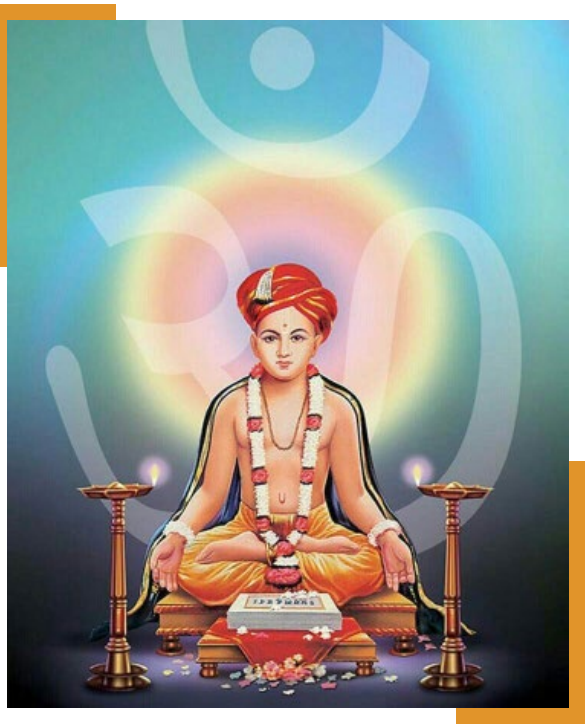







भक्ति
वाग्मिता
सेवा
बुद्धि
विद्या
शील
प्रेम


प्रचलित
राम
Dr. Ashu Goyal



मूर्तिमंत आनंद का अक्षय स्रोत है भावार्थ दीपिका ज्ञानेश्वरी। श्री ज्ञानेश्वर महाराज ने, सद्गुरु निवृत्तिनाथ कृपा प्रसादरूपी प्राप्त अपने अंतरंग का आत्मानंद ज्ञानेश्वरी के माध्यम से प्रवाहित किया। अनेक प्रमेय, तत्वज्ञान के गहन सिद्धांतों से मंडित रसमयी ज्ञानेश्वरी जीवन के वास्तविकता से भी उतनीही समरस है।

संसार कितना भी आकर्षक प्रतीत क्यों न हो, उसमें न अटकते हुए, और कितना भी भयावह लगे फिरभी न डगमगाते हुए परम गंतव्य किओर अग्रेसर करने का पाथेय हमे ज्ञानेश्वरी प्रदान करती है।ज्ञानेश्वरी को सद्गुरु देव ने आधुनिक वेद की उपमादी हैं। यह ऐसा अद्भुत दिव्य ब्रह्मरस का रसपान है कि चखने के बाद उसमे डुबे ही रहने को मन करता है। उसके गहन अर्थ मे प्रवेश करने का साहस केवल महाराज के कृपासे ही कर सकते है। ज्ञानेश्वरी की जीवन दर्शन करनेवाली कुछ मनोवैज्ञानिक ओवियों का चिंतन उनके चरणों में समर्पित होकर सद्गुरु के मार्गदर्शन मे करनने का प्रयास है।धृतराष्ट्र के वचन से भगवतद्गीता का आरंभ होता है।मानवी विकारों का सर्वोच्च प्रतिनिधि है धृतराष्ट्र। इसका विश्लेषण करते हुए ज्ञानेश्वर महाराज कहते हैं-

पुत्र स्नेहे मोहितु । धृतराष्ट्र असे पुसतु ।
म्हणे संजया सांगे मातु । कुरुक्षेत्री ची ।। १.८५ ।।

मोहित पुत्रस्नेह से । धृतराष्ट्र है पूछते ।
वृत्त कुरुक्षेत्र के । बताओ संजय ।।

धृतराष्ट्र के इस तीव्र पुत्र मोह के कारण ही दोनो कुल और संपूर्ण सृष्टि विनाश की कगार पर है इस ओर ज्ञानेश्वर महाराज हमारी दृष्टि ले जाते है। अर्जुन मे भी स्वजनों क प्रती मोह है। "दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण"यह अर्जुन के गीता में शब्द है।ज्ञानेश्वर महाराज इस मोह का अप्रतिम वर्णन करते है। स्वजनों को देखकर कैसी हो गई अर्जुन की अवस्था?

जैसे भ्रमर भेदी कोडे ।
भलतैसे काष्ठ कोरडे ।
परी कलिके माजी सापडे ।
कोवळीये ।।

भ्रमर करता है छेद ऐसे ।
काष्ठ को सहजता से ।
बन्दी वह भी होता कैसे ।
कोमल कलिका में।।

मनुष्य के स्वजन स्नेह का अत्यंत मनोवैज्ञानिक विश्लेषण महाराज करते हैं।सूखे काष्ठ को भी सहजता से छेद करनेवाला भ्रमर शाम के समय पराग सेवन करने केलिए कमलपुष्प पर बैठता है। सूर्यास्त होने पर जब वह कमल कलिका पंखुड़ियों को सीमट लेती है, तब वही भ्रमर कमल की कोमल पंखुडिओंको भी छेद नहीं पाता।महाराज कहते हैं जीवन मे कठीन बंधन को तोडना सरल है, किंतु कोमल बंधन तोडना अत्यंत कठीन है।हम सब इन कोमल बंधनों में अटकते है। मुक्ती का , मोक्ष का आनन्द पाना है तो कठीन हो या कोमल बन्धनो से अंतरंग मे मुक्त होना सीखना होगा ।

ज्ञानेश्वरी के चिंतन से माउली हम सबको यह परम आनंद की अनुभूति प्रदान करे यही उनके चरणों में प्रार्थना ।

- सौ. वंदना वर्णेकर



Karma Sādhanā

In Geeta Parivar classes we come across several learners who after learning the first few Adhyaays very well start understanding the importance of Geeta in life. But they start developing a feeling that Ohh! I am very late in coming to this spiritual path of Geeta. Many of them are in middle age or in the advanced age and they start doubting as to how they will learn all 18 Adhyaays and when they can really start following the principles of Geeta in the remaining part of the life. Will their efforts remain incomplete? Will it be a futile exercise as they probably cannot attain the ultimate objective of liberation or salvation? Parmatma has disposed off these doubts in Adhyaay 6, Shloka No. 40:

पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।
न हि कल्याणकृत्कश्चिद्दुर्गतिं तात गच्छति॥६-४०॥

One who is engaged in auspicious, pious activities never suffers a downfall even in future lives as nothing goes waste. Death does destroy our auspicious activities. We don't have to restart our journey from the beginning on this noble spiritual path. We start from where we had left. It is like the balance amount of our saving account getting carried forward. Every year we don't to open a new account. The process of carry forward is an automatic process. Similarly our auspicious, pious, Satvik activities and our spiritual study gets carried forward and nothing goes waste in this life or in future lives.

The conclusion is: Remove the doubt that we have to become master and champion of spirituality in this life itself else we will be left nowhere. We have to keep doing our best and it will remain with us forever whether in this life or in future lives.

- Vikas Vaidya



Learn Geeta – IT Department

हजारों वर्षों से भगवद्गीता करोड़ों लोगों के लिए आस्था और जिज्ञासा का केंद्र बना हुआ है। अनगिनत लोग आज भी गीता पढ़ना, समझना और कंठस्थ करना चाहते हैं। लेकिन कैसे करें यह समझ नहीं पाते। कठिन लगने वाले इस कार्य को learngeeta.com के माध्यम से गीता परिवार ने सरल और सुगम कर दिया है। learngeeta.com हजारों-लाखों लोगों के लिए गीता कंठस्थ करने और समझने का एक उपयोगी माध्यम सिद्ध होगा।

MY OWN EXPERIENCE

अप्रैल 2020 से 'Learn Geeta' और मई 2020 से 'IT Department' में 'अनुभव' अत्यंत मधुर, भावपूर्ण और अनुशासन का पाथेय रहा। प्रत्येक व्यक्ति के लिए सीखने और सिखाने के लिए पर्याप्त मंच हैं। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ भगवद्भक्ति और भगवद्गीता का अभ्यास अधिक से अधिक साधकों को प्राप्त हो इस हेतु कक्षाओं का संचालन digital माध्यम से हो रहा है। सभी साधकों के प्रवेश, समूह, वर्ग, कक्षाएँ, परीक्षाएँ, सूचनाएँ, परिणाम, प्रशस्ति पत्र और इस मार्ग के समस्त प्रशासनिक कार्यों को संपादित करने हेतु विभिन्न software का प्रयोग हो रहा है। ये सभी software 'Learn Geeta' कार्यक्रम से जुड़े हुए volunteers के द्वारा ही संपादित होते आ रहे हैं।

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्। अर्थात् उठो, जागो और ध्येय की प्राप्ति तक रुको मत। यह ध्येय रखते हुए 'संकल्पित कार्य' के प्रति समर्पण रहता है – ऐसा ही मेरा अनुभव 'जीवन' और 'Learn Geeta के volunteers तथा IT Team' के साथ है। हम अपनी क्षमता अनुसार निश्चित समय में अपने कार्य की अनुक्रमणिका को पूरे जुनून के साथ संकल्पित होकर पूर्ण करते हैं। कार्य की गुणवत्ता और विस्तार की रूप रेखा को अत्यंत सहज और सुलभ भी रखते हैं।

WORKING STYLE

साधकों की आवश्यकताओं और volunteers के कार्य को अत्यंत व्यवस्थित और सहज रूप में प्रस्तुत करने हेतु कार्य की रूप रेखा मार्गदर्शक भैया / दीदी / Team के माध्यम से प्राप्त होती है। निर्माण और रचना का उन्नत कार्य कौशल रखने वाले 'volunteer / मार्गदर्शक' 'भैया / दीदी / Team' कार्य का तकनीकी ताना बाना (Architecture) बुनते हैं। फिर एक निश्चित समय सीमा में कार्य का सम्पादन (Development) होता है और इस तरह से अपेक्षित कार्य की पुष्टि (Quality Assurance) होने पर हमारी सेवा गीता परिवार के जरिये गीता कार्यों में भगवद्भक्ति की भाँति अर्पित हो जाती है। वास्तव में यह कार्य, वर्तमान समय में प्रचलित Agile Methodology से होता है। हम इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को पूर्ण व्यवस्थित और online करने की दिशा में तीव्र गति से कार्य कर रहे हैं। सभी महत्वपूर्ण कार्यक्रम और सम्मेलनों से पूर्व 'क्या हम तैयार हैं? (pre-checks)' की जांच करना और इन कार्यक्रम या सम्मेलनों के पश्चात् 'क्या सुधार / new features आवश्यक हैं?' पर विचार विमर्श (discussion on FAQs / Feedbacks) करके उन्हें अंतिम रूप देना - यही चक्र (sprint) गतिमान रहता है।

Learn Geeta कार्यक्रम को और अधिक सहज, सुगम और उन्नत स्तर पर ले जा सकने की क्षमता रखने वाले सभी विशिष्ट विचारों को सभी के समक्ष रखने की उचित स्वतंत्रता रहती है। 'कार्य की गरिमा' और 'data की सुरक्षा तथा गोपनीयता' बनाए रखना सभी से अपेक्षित रहता है।

GEETA SEWI BY TECHNICAL MINDS

गीता सेवा में तत्पर प्रत्येक साधक का अनुभव और अधिक सहज तथा अनुशासित हो अतः manual works को online / digital तरीके से प्रस्तुत करने का कौशल Technical Minds द्वारा अनवरत जारी है। कुछ प्रमुख सेवा क्षेत्र इस प्रकार हैं:

1. Learn Geeta Website
2. Help Portal
3. Admin Portal
4. Registration Portal
5. Gift Portal
6. Learning Management System - Moodle
7. Process Automations

a. Advanced Excel Applications
b. Google Script
c. Reports
d. Notification Processors

8. Digital Media Production
9. Dev OPS

अनेक अन्य क्षेत्र भी हैं जिन पर हमारे परिवार से कई भैया / दीदी कार्यरत हैं जिनका विस्तार IT Team में सेवा काल के क्षणों में समझा जा सकता है। उनकी यह समर्पित सेवा भावना सभी साधकों और volunteers के लिए अनुकरणीय है।

TEAM COOPERATION

'परिवार' शब्द का वास्तविक अर्थ Team work & Co-ordination में बहुत ही सहजता से दिखता है। परस्पर समरसता, Open to 'help and support', उपलब्धता, Care to each other's time & value, और समयानुशासन आदि अनेक गुणों से विभूषित तथा अपने क्षेत्र में कार्य पारंगत कार्यकर्ता Team के सदस्य हैं। आवश्यकता के समय अत्यंत कम समय की सूचना पर भी उपलब्धता सुनिश्चित करने का गुण सभी सदस्यों में हैं जो की सराहनीय तथा भविष्य में नियोजित रखने के योग्य है। सभी मिलकर चिंतन करते हैं (Thought processing), एक समय में एक कार्य करते हुए (One Goal) पूरी आत्मा (Full dedication) उसमें डाल देते हैं और बाकी सब भूलकर (Focused) अपने-अपने कार्य क्षेत्र अनुसार कार्य पूर्ति के मार्ग से भक्तिमय रहते हैं। वास्तव में तो यह भाव गीता परिवार के सभी कार्यकर्ताओं में दिखता है।

FUTURE PLANS

वर्तमान समय में गीता परिवार के Learn Geeta प्रकल्प का विस्तार 122 देशों में लगभग 3.5 लाख साधकों तक विस्तृत है। अधिक से अधिक गीता प्रेमी इस भगवद्भक्ति में सम्मिलित हों इस हेतु से हमारे software अधिक से अधिक manual कार्यों को automate करें तथा प्रत्येक समय website की availability बनी रहे, इस अनुसार हमारी भविष्य की कुछ योजनाएँ इस प्रकार हैं –

1. नए गीता प्रेमी तेज़ी से जुड़ें इस हेतु digital marketing का Learn Geeta प्रकल्प में विकास और प्रयोग
2. Process setup for Dev OPS
3. 1 लाख से अधिक concurrent viewers की क्षमता
4. Learn Geeta – Live Portal – Under development
5. सभी वर्गों में प्रवेश के लिए मात्र एक portal – Under development
6. Mobile Application – Under development
7. Website नवीनीकरण
8. Notification Processor

a. Email Processor
b. WhatsApp processor
c. SMS processor

9. Other useful utilities related to daily manual works

TEAM SELECTION

'आओ गीतासेवी बनें' – इस कार्यक्रम के माध्यम से IT Team से जुडने के लिए आवेदन किया जा सकता है। https://sewa.learngeeta.com/ इस website link के माध्यम से Form भरा जा सकता है। Form भरते समय IT Division के विकल्प चुनें और संबन्धित जानकारी भरें। अत्यंत शीघ्र आपसे संपर्क किया जाएगा।

कुछ बातें IT Team से जुडने के लिए ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक है –

1. यदि आपका का IT Field का कोई अनुभव / skill है तभी Form भरें
2. यदि LinkedIn profile है तो उसका link Form में अवश्य भरें
3. आपका कार्य कौशल यदि उदाहरण के रूप में प्रस्तुत कर सकें (demo links / website links) तो अति उत्तम है

WHAT IS OUR NEED SO THAT NEW PEOPLE CAN JOIN?

यदि आपके पास निम्नांकित technologies अनुभव प्राप्त है अथवा आपको ऐसा विश्वास है आप इन technologies पर कार्य कर सकने की क्षमता रखते हैं तो https://sewa.learngeeta.com/ के माध्यम से Form जरूर भरें –

1. PHP
2. MYSQL
3. HTML, Java Script, CSS
4. Advance Excel
5. Google Script
6. LMS - Moodle
7. Dev-OPS (CentOS / any UNIX based / Cloud)
8. Digital Marketing
9. Digital Media Production

- आशीष तिवारी



गीता परिवार नेपाल की स्थापना

गीता परिवार नेपाल की स्थापना गीता परिवार के कार्याध्यक्ष श्री संजय मालपाणी भैया के अनुग्रह पर संस्थापक अध्यक्ष प. पू. स्वामी श्रीगोविंद देव गिरीजी महाराज द्वारा गीता परिवार के 34वें स्थापना दिवस पाण्डव पञ्चमी (ई.स.२०२०) के दिन प्रथम अंतराष्ट्रीय शाखा के रूप में घोषणा की गई थी।इस कार्यक्रम में नेपाल की तरफ से सर्वप्रथम गीता परिवार नेपाल के विषय मे जय किसन सारडा को गीता परिवार नेपाल की जानकारी करवाने का अवसर प्रदान किया गया।जय भैया ने घनश्याम राठी, लक्ष्मण नेवटिया, राजकुमार भट्टराई एवं किरण अटल दीदी को साथ लेकर भैया दूज के दिन शुभारम्भ करने की जानकारी करवाई। उन्होंने गीता परिवार द्वारा व्हाट्सएप्प के माध्यम से संचालित गीता पढो पढाओ जीवन में लाओ एवं गीता परिवार के पांच सिद्धान्तों को मूलरूप से आत्मसात् करते हुए इस कार्य को पूरे नेपाल में आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

प. पू. स्वामीजी महाराज द्वारा गीता परिवार नेपाल के लिए जय किशन सारडा को गीता परिवार नेपाल का राष्ट्रीय अध्यक्ष घोषित करते हुए नेपाल हमारे पड़ोसी देश होने के नाते गीता के प्रचार-प्रसार एवं पूर्ण सहयोग प्रदान करने के लिए गीता परिवार की उत्तर प्रदेश शाखा, विशेषतः आशू भैया को नेपाल को सँभालने की जिम्मेदारी सौंपी।

गीता परिवार नेपाल विगत एक वर्ष से गीता प्रशिक्षण का कार्य व्हाट्सएप्प के माध्यम से L-1 से L-4 तक की कक्षा संचालित हैं। ये कक्षायें नेपाल की प्रथम प्रशिक्षिका रेखा राठी द्वारा शुरू हुई थी। रेखा दीदी ने हाल ही में गीताव्रती की उपाधि प्राप्त की है।

यह जानकारी करवाते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि गीता परिवार नेपाल ने नेपाली भाषा मे कक्षा प्रारम्भ हेतु गीता परिवार से अनुमति प्राप्त की है एवं आगामी मार्च महीने से ज़ूम के माध्यम से L-1 की नई कक्षा के लिए 11वीं भाषा के रूप में नेपाली भाषा को समावेश किया गया है।

- जयकिशन सारडा

हिंदी शब्द खोज - प्रश्नमाला

इस प्रश्नमाला में नीचे दिये प्रश्नों के हल छुपे हुये हैं

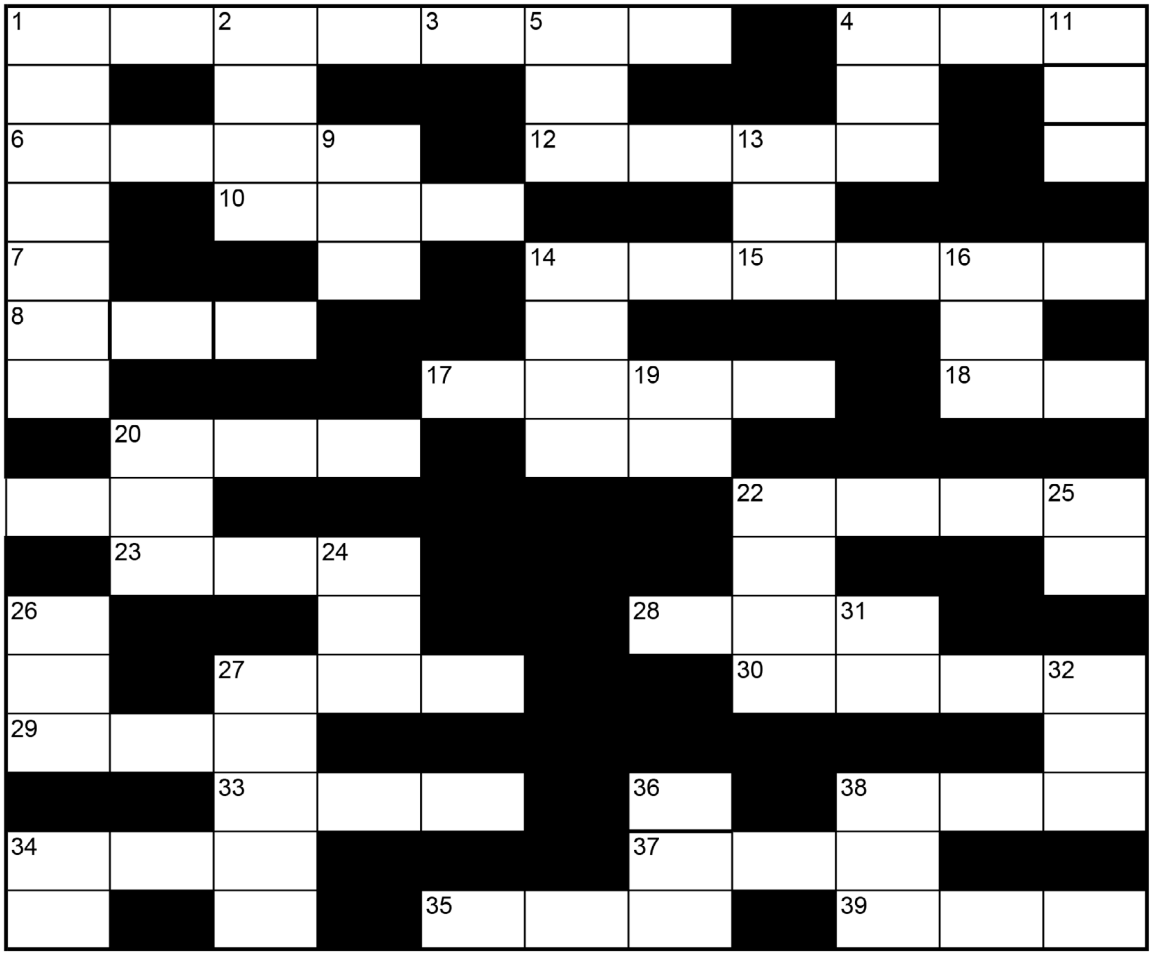
(सावधान - कुछ शब्द विपरीत दिशा मे भी हो सकते है)

त्र	हि	ष्ण	त्र	क्षे	रु	कु	यु	धि	ष्ठि	र	उ
छ	कृ	दे	व	रा	ज	इ	न्द्र	ल	णी	च्चै	कु
श्री	ख	अ	ष्म	ह	ल	कु	मि	भी	श्र	क्षे	रा
नी	ला	क	मा	र	नी	जा	ष्म	वा	शु	पा	ज
का	क	च	भा	ट्ठा	अ	पि	मो	क	य	रा	कु
य	ए	की	त्य	अ	ता	शी	दे	हि	णी	श	मा
सू	ज	नि	स	म	ग	व	द	हि	नी	र	री
छ	र्य	मे	ह	इ	मु	र	रो	का	ए	मु	अं
वि	ह	वि	न	नि	चा	मु	नि	उ	ए	नि	बा
क	क	ट्ठा	मि	ज	शी	नि	मु	ल	पि	क	भी
र्ण	वि	श्व	रू	प	द	र्श	न	यो	ग	पि	ख
चा	पा	नी	ऋ	षि	पा	रा	श	र	रु	यु	त्र

प्रश्नावली :

1. भगवान कृष्ण का जन्म कौन से नक्षत्र में हुआ?
2. नरकासुर का वध भगवान कृष्ण ने किस पटरानी के साथ किया था?
3. सांख्ययोग का प्रतिपादन किसने किया?
4. किस व्यक्ति को अपने बेटे नारायण का नाम लेने से यमदूत से छुटकारा मिल गया था?
5. अज्ञातवास में भीम ने किसका वध किया था
6. राजा परीक्षित को भागवत कथा किसने सुनाई?
7. वेदव्यास जी के पिता के नाम क्या है?
8. समुद्र मंथन के लिए निकले अमृत को बांटने के लिए भगवान विष्णु ने कौन सा अवतार लिया था?
9. कौरव सेना में सबसे पहले शंख किसने बजाया ?
10. महाभारत युद्ध होने के पूर्व शांति दूत बनकर कौन गए थे ?
11. अर्जुन के प्रपौत्र का नाम क्या है ?
12. अर्जुन किस देवता के आवाहन से प्रकट हुए?
13. शिखण्डी पूर्व जन्म में कौन थे?
14. समुद्र मंथन के समय कौन सा घोड़ा निकला था?
15. महाभारत युद्ध कितने दिन चला था?
16. गीता के 11वें अध्याय का क्या नाम है?
17. महाभारत में कितने श्लोक हैं?
18. द्रौपदी के चीरहरण के समय दुर्योधन को उसके कौन से भाई ने रोका था?
19. कितने महारथियों ने मिलकर अभिमन्यु का वध किया था
20. वेदव्यास जी के पिता के नाम क्या है?
21. गीता कौन-सी तिथि को सुनाई गई है?
22. गीता कहां पर सुनाई गई है?
23. गीता के अनुसार भक्त कितने प्रकार के हो सकते हैं?
24. महाभारत में धर्म पुत्र किसे कहा गया है?
25. अर्जुन से पहले गीता के पवित्र ज्ञान का श्रवनकर्ता कौन था?

अगले पृष्ठ पर इस क्रॉसवर्ड के हल हेतु संकेत दिये हैं -



ऊपर से नीचे

(कोष्ठक में दिए गए अंक अक्षरों की संख्या हैं)

1 . पार्थ, धनञ्जय (3)
2 मृत्यु के देवता (4)
4. चोक, मकान के बीच का स्थान (3)
5. देह (3)
6 . नाशवान (3)
7 गोपनीय (3)
9 मिथिला नरेश (3)
11 कृति (3)
13 पहुँचने का स्थान (3)
14 शायद (4)
16 बन्दर (3)
19 एक फल का नाम
20 किसान
22 युद्ध की इच्छा वाले गीता श्लोक 1 (4)
24 उच्चारण हेतु मुख का स्थान (3)
25 मिट्टी (2)
26 शुरुआत (3)
27 जो साधारण नहीं है (5)
31 जंगल (2)
32 पुष्प, फूल (3)
34 मृत्यु (2)
36 भ्रम की स्थिति (3)
38 विष (3)
39 घूमना, विचरण करना (3)

बांये से दाहिने

(कोष्ठक में दिए गए अंक अक्षरों की संख्या हैं)

1 श्रीमद्भगवद्गीता के 18 विभाग (3)
2 श्री कृष्ण का वंश (4)
3 कुल को चलाने वाला (3)
4 श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 15 श्लोक 1 का एक शब्द (3)
6 शिवजी का एक और नाम (4)
8 छीनना (3)
10 मरण का विपरीत (3)
12 युद्ध भूमि (4)
14 दायित्व, करणीय (3)
15 आचरण (4)
17 ऋषि ब्रजश्रवा का पुत्र (4)
18 युद्ध (2)
20 माधव, केशव (3)
22 पाण्डवराज (4)
23 छंद, पद्य (3)
27 जिसका व्यय नहीं होता (3)
29 विश्वास (3)
30 राम को 14 वर्ष के लिए जाना पड़ा (4)
33 सोच (3)
34 डरपोक (3)
35 नौ प्रकार की भक्ति (3)
37 ईश्वर की मूर्ती (3)
38 बादल (3)

हिंदी शब्द खोज

यहाँ गीताजी के 18 अध्यायों के नाम हैं, क्या आप उन्हे ढूंढ सकते है?

श्र	त्र	गु	ण	त्र	य	वि	भा	ग	यो	ग	य	ग	ग	क्ति
द्धा	क	ग	भ	पु	रू	क्ष	सं	न्या	सं	ग	रा	भू	ग	भा
त्र	ग	यो	प	र्जु	र्श	सां	यो	यो	यो	यो	ज	र	ग	ग
य	क्ति	म	ज्ञा	ह्य	ग	ख्य	ख्य	द	ग	स	वि	यो	ज्ञ	ग
वि	यो	य	ग	न	यो	पु	षा	यो	ग	न्या	द्या	ग	क्षे	यो
भा	श्व	सं	रू	रू	क	वि	रू	यो	ग	सं	रा	यो	त्र	न
ग	त्म	त्म	सं	यो	न	र्म	न	षो	मो	क्ष	ज	ति	क्षे	ज्ञा
यो	ग	आ	सं	र्जु	भ	र्श	सं	ग	त्त	मो	गु	भू	त्र	वि
ग	न	यो	अ	यो	द	क्ति	स	न्या	ग	म	ह्य	वि	ज्ञ	न
यो	ग	त्त	स	प	क	र्म	यो	ग	स	स	यो	श्र	वि	ज्ञा
ह्म	सां	यो	रू	न्या	यो	यो	यो	ग	गु	यो	ग	ग	भा	न
ब्र	ग	श्व	ग	सां	सं	ग	यो	ग	ब्र	सां	ग	यो	ग	श्व
र	वि	वि	र्जु	ग	षा	र्म	ग	ग	भ	सां	द्वि	यो	यो	सं
क्ष	षा	वि	पु	यो	ग	श्व	क	भा	यो	स	ग	श्व	ग	प
अ	यो	ज	ग	ग	यो	ग	भा	द्वि	प	सं	र	सु	वा	दै

हिंदी शब्द खोज - प्रश्नमाला उत्तर

त्र	हि	ष्ण	त्र	क्षे	रु	कु	यु	धि	ष्ठि	र	उ
छ	कृ	दे	व	रा	ज	इ	न्द्र	ल	णी	च्चै	कु
श्री	ख	अ	ष्म	ह	ल	कु	मि	भी	श्र	क्षे	रा
नी	ला	क	मा	र	नी	जा	ष्म	वा	शु	पा	ज
का	क	च	भा	ट्ठा	अ	पि	मो	क	य	रा	कु
य	ए	की	त्य	अ	ता	शी	दे	हि	णी	श	मा
सू	ज	नि	स	म	ग	व	द	हि	नी	र	री
छ	र्य	मे	ह	इ	मु	र	रो	का	ए	मु	अं
वि	ह	वि	न	नि	चा	मु	नि	उ	ए	नि	बा
क	क	ट्ठा	मि	ज	शी	नि	मु	ल	पि	क	भी
र्ण	वि	श्व	रू	प	द	र्श	न	यो	ग	पि	ख
चा	पा	नी	ऋ	षि	पा	रा	श	र	रु	यु	त्र

1. ऐतिहासिक
2. सत्यमेव
3. कलिंग युद्ध
4. अशोकचक्र
5. कीचक
6. शुक्रवेद मुनि
7. ऋषि पाराशर
8. मोहिनी
9. भीष्म पितामह
10. श्रीकृष्ण
11. जनमेजय
12. देवराज इन्द्र
13. राजकुमारी
14. उल्लेखनीय
15. अट्ठारह (18)
16. विश्वरूप दर्शन
17. एक लाख
18. विकर्ण
19. छह (6)
20. पाराशर मुनि
21. एकादशी
22. कुरुक्षेत्र
23. चार (4)
24. युधिष्ठिर
25. सूर्य

Crossword उत्तर

अ	ध्या	य	दु	वं	श		प्रा	हु	र
र्जु		म			री		गं		
न	ट	रा	ज		र	णा	गं	ण	
श्व		ज	न	म			त		
र			क		क	र्त	व्य	ह	वा	र
ह					दा				न	
स्य				न	चि	के	त		र	ण
	कृ	ष	ण		त	ला				
	ष						यु	धि	ष्ठि	र
	क	वि	ता				यु			ज
आ			ल			उ	त्स	व		
रं		अ	व्य	य			व	न	वा	स
भ	रो	सा								रो
		धा	र	णा		दु		ज	ल	ज
का	य	र				वि	ग्र	ह		
ल		ण		न	व	धा		र	म	ण

शब्द खोज का हल

श्र	त्र	गु	ण	त्र	य	वि	भा	ग	यो	ग	य	ग	ग	क्ति
द्ध	क	ग	भ	पु	रू	क्ष	सं	न्या	सं	ग	रा	भू	ग	भा
त्र	ग	यो	प	र्जु	र्श	सां	यो	यो	यो	यो	ज	र	ग	ग
य	क्ति	म	ज्ञा	ह्य	ग	ख्य	ख्य	द	ग	स	वि	यो	ज्ञ	ग
वि	यो	य	ग	न	यो	पु	षा	यो	ग	न्या	द्या	ग	क्षे	यो
भा	श्व	सं	रू	रू	क	वि	रू	यो	ग	सं	रा	यो	त्र	न
ग	त्म	त्म	सं	यो	न	र्म	न	षो	मो	क्ष	ज	ति	क्षे	ज्ञा
यो	ग	आ	सं	र्जु	भ	र्श	सं	ग	त्त	मो	गु	भू	त्र	वि
ग	न	यो	अ	यो	द	क्ति	स	न्या	ग	म	ह्य	वि	ज्ञ	न
यो	ग	त्त	स	प	क	र्म	यो	ग	स	स	यो	श्र	वि	ज्ञा
ह्म	सां	यो	रू	न्या	यो	यो	यो	ग	गु	यो	ग	ग	भा	न
ब्र	ग	श्व	ग	सां	सं	ग	यो	ग	ब्र	सां	ग	यो	ग	श्व
र	वि	वि	र्जु	ग	षा	र्म	ग	ग	भ	सां	द्वि	यो	यो	सं
क्ष	षा	वि	पु	यो	ग	श्व	क	भा	यो	स	ग	श्व	ग	प
अ	यो	ज	ग	ग	यो	ग	भा	द्वि	प	सं	र	सु	वा	दै

शब्दावली

1: अर्जुनविषादयोग

2: सांख्ययोग

3: कर्मयोग

4: ज्ञानकर्मसंन्यासयोग

5: कर्मसंन्यासयोग

6: आत्मसंयमयोग

7: ज्ञानविज्ञानयोग

8: अक्षरब्रह्मयोग

9: राजविद्याराजगुह्ययोग

10: विभूतियोग

11: विश्वरूपदर्शनयोग

12: भक्तियोग

13: क्षेत्रक्षेत्रज्ञविभागयोग

14: गुणत्रयविभागयोग

15: पुरुषोत्तमयोग

16: दैवासुरसंपद्विभागयोग

17: श्रद्धात्रयविभागयोग

18: मोक्षसंन्यासयोग

कार्यकर्ता मनोगत

జై శ్రీకృష్ణ అందరికి నాన్ స్కార్ ఎలు, అభివాద్ ఎలు ్ రియు అభినందనలు. పర్ ఆదరణీయ స్వామీజీ గోవంద దేవ్ గిరి జీ ్ హరాజ్ గారికి చరణస్పర్శ చేస్తూ, ఆషు భయ్యా , సంజయ భయ్యా ్ రియు అందరి పెద్దలకు న్ స్కరిస్తూ సవినయపూర్వక్ ఎగా విన్నవించునదే్ నగా, నేను గీతాపరివార్ లో మార్చి 2021 న ప్రవేశించడ్ ఎ జరిగినది. మొదటి స్థాయి పూర్తిచేసిన తరువాత గీతా జిజ్ఞాసు పరీక్ష ఏప్రిల్ మాస్ ఎలో, రెండవ స్థాయి పూర్తిచేసి గీతా పాధక్ పరీక్ష జూన్ లో, ్ రాడవ స్థాయి పూర్తిచేసి గీతా పధిక్ పరీక్ష దిసంబరు, 2021 లో భగవంతుని కృపవలన పూర్తి అయినవి. ్ న గీతాపరివార్ నన్ను L1,L2,L3 ్ రియు L4 ప్రశీక్షకుడిగా నియమించి నామీద చూపిన అపార్ యిన కృపకు నేను సర్వదా ్ న పరివార్ కు ఋణపడి ఉంటాను అని సగౌర్ ఎగా చెప్పడానికి
చాలా ఆనంద్ ఎగా ఉన్నది. ఒకే స్ య్ ఎలో L4 విద్యార్థి ్ రియు L4 ప్రశీక్షకుడిగా భగవంతుడు ్ రియు ్ న గీతాపరివార్ ప్రస్తాదించిన అవకాశ్ ఎనకు, చూపిన విశ్వాస్ ఎనకు పూర్తి న్యాయ్ ఎ చేసే ప్రయత్న్ ఎలో ఏమాత్ర్ ఎ , ఎట్టిపరిస్తితిలోను లోప్ ఎ చేయనని ్ నసార ఇందు్ కాల్ ఎగా తెలియజేయుటకు చాలా సంతోషిస్తున్నాను. ఇదియే కాకుండా గీతా జిజ్ఞాసు, పాధక్ పరీక్షల examiner గా, L1,L2 ప్రశీక్షకుల examiner గా, L2 ప్రశీక్షకుల mentor గా , L1 TA ్ రియు GC గా నాకు కల్పించిన అవకాశానికి ఆభగవానుని ్ రియు భగవద్స్వరూపులైన ప్రశీక్షార్థులకు సేవచేసేభాగ్యాన్ని కల్పించిన ్ న గీతాపరివార్ కు ఏవిధంగా కృతజ్ఞతలు తెలప్గాలో నాకు పాలుపోవుటలేదు. భగవద్గాన్నిధ్యాన్నిచేరుకొనే ఈ ప్రయాణం సుగ్ ంగా తుదిస్వాసవరకు ఇలాగే కొనసాగాలని ్ న సహచరులందరిని ప్రార్థిస్తూ, నావలన ఇతరులకు మేల్ము మాత్రమే జరగాలి, ఎట్టిపరిస్తుతులలోను ఏ ఒక్కరికి కూడా కీడు జరగకుండా చూడ్ ని భగవంతుడ్ని ్ రొకసారి ్ నసారా ప్రార్థిస్తూ , నన్ను ఒక సదస్యునిగా అను్ తించిన ్ న గీతాపరివార్ కు కోటి కోటి అభివాద్ ఎ లు తెలుపుతూ , అనుశాసన బద్ధుడనైఉంటానని మాట ఇస్తూ , పెద్దలందరికి ్ రొకసారి పేరుపేరున కృతజ్ఞతలు తెలుపుతూ నా వాణికి విరా్ ్ ఎ ఇస్తున్నాను. జై శ్రీకృష్ణ , జై భారత్

VVLN Sarma
Vishakhapatnam
L2 L3 Trainer

ಭಗವಂತ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮಅರ್ಜುನನ ನೆಪ ಮಾಡಿಕೊಂಡು ಇಡೀ ಮನುಕ್ಕ ಲಕ್ಕೆ ಈ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಬೋಧಿಸಿದ್ದಾನೆ ಆ ಭಗವಂತನ ವಾಣಿಯನ್ನು ನಾವು ಈಗ ಕಲಿಯುತ್ತಿರುವುದು ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವುದು ನಮ್ಮ ಬಹುಜನ್ಮದ ಪುಣ್ಯಫಲ ಗೀತೆಯ ಸಾರವೆಂಬಂತೆ ಬರುವ ಕಲವೇ ಕೆಲವು ಸೂತ್ರಗಳನ್ನು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡರೂ ಸಾಕ್ಕ ನಮ್ಮ ಜೀವನ ಪಾವನ ಆಗುತ್ತದೆ ಅವುಗಳನ್ನು ಪಟ್ಟಿ ಮಾಡುವುದಾದರೆ
೧)ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ ಅನನ್ಯವಾದ ಭಕ್ತಿ

೨)ಭಗವಂತನಲ್ಲಿ ಸಂಪೂರ್ಣ ಶರಣಾಗತರಾಗುವುದು
೩)ಎಂಥದೇ ಸಂದರ್ಭದಲ್ಲಿ ಯೂ ಪರಧರ್ಮಕ್ಕೆ ಮಾರುಹೋಗದಿರುವುದು ಅಥವಾ ಅನುಸರಿಸದಿರುವುದು
೪)ನಮ್ಮ ಕರ್ತವ್ಯ ನಾವು ಮಾಡುವುದು ಮತ್ತು ಅದರ ಫಲಾಫಲಗಳನ್ನು ಆ ಭಗವಂತನಿಗೇ ಬಿಡುವುದು
೫)ಮತ್ತು ನಮ್ಮನ್ನು ಅರಿತುಕೊಳ್ಳುವುದು ಹಾಗೂ ಭಗವಂತನನ್ನು ತಿಳಿಯುವುದು ಮತ್ತು ಸಕಲರಿಗೂ
ಒಳ್ಳೆಯದನ್ನೇ ಬಯಸುವುದು
ಹೀಗೇ ಪಟ್ಟಿ ದೊಡ್ಡದಾಗುತ್ತದೆ

ಇದರಲ್ಲಿ ಯಾವುದೇ ಗುಣವನ್ನು ನಾವು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡರೆ ಸಾಕ್ಕ ನಮ್ಮ ಜೀವನ ಸಾರ್ಥಕ
ಇಂಥ ಗೀತೆಯನ್ನು ಕಲಿಯುತ್ತಿರುವ ,ಕಲಿಸುತ್ತಿರುವ ಮತ್ತು ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಳ್ಳಲು ಅವಕಾಶವನ್ನು ಕೊಟ್ಟ ಆ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ ಪರಮಾತ್ಮನಿಗೆ ಕೋಟಿ ಕೋಟಿ ನಮಸ್ಕಾರಗಳು

ಜೈ ಶ್ರೀ ಕೃಷ್ಣ

Shridhar Patil
Dharwad, Karnataka
Core Trainer

ஜெய்ஸ்ரீகிருஷ்ணா!""கீதாபரிவாரி""ல்சேருதல்,ஆன்லைன் கீதை வகுப்புகள் மூலம் சரியான சமஸ்கிருத ஸ்லோக உச்சரிப்பைக் கற்றுக்கொள்வது மற்றும் பல்வேறு விளக்க அமர்வுகள் மூலம் அதன் அர்த்தங்களைக் கற்றுக்கொள்வது மற்றும் tech, GC, BC, anchor, அட்மிஷன் டீம், நியூஸ்லெட்டர் டீம், கம்யூனிகேஷன் ஸ்டார் டீம், பேக்எண்ட் டீம் உறுப்பினராக இருப்பது , ஆகியவற்றின் மூலம், கீதா சேவகியாக இங்கு பணியாற்றுவது,மிகவும் மகிழ்ச்சியான அனுபவம். எனது தன்னம்பிக்கையும் நேர்மறை எண்ணமும் அதிகரித்தது வருகிறது.கிருஷ்ண கிருபை எங்கும் எப்போதும் பாயட்டும்."என்றென்றும் நன்றியுள்ளவர்.

Smt. Punita Prasad
Chennai
Group Coordinator

That was September 2020, when in my college WhatsApp group I got a forwarded message regarding Free Geeta Classes to Learn Geeta. Since it was FREE and was providing Opportunity to learn Geeta in Sanskrit with weekly interpretation So I thought Let's Join it. Although I joined but missed some classes due to my so-called busy schedule and my laziness. My trainer called me, and motivated me to attend the class. Once started, I started enjoying the classes.

During the class I was very much impressed with the easy teaching procedure, including Recitation, Timely start of class, Soft spoken behavior and helping nature of faculty members. I thought that, "I must have these skills in me!" so started my Geeta Sevi journey by Serving as a Technical Assistant. Although I am a housewife but, Geeta Pariwar, surprised me that here I can Learn and improve so many Interpersonal Skills. Here, I also may share my ideas and got opportunity to share thoughts for betterment.

Since then I never missed any chance to grab the opportunity to give seva. I am really enjoying by learning & managing new things, and expanding my family world wide.I always Pray to Bhagwan Krishna to never ever keep me away from Gita Parivar. I feel so blessed to being a part of Geeta Pariwar's Learngeeta Program

Mrs. Mayuri Nishikant Mathapati.
Pittsburgh, PA, USA
Technical Assistant

प्रशिक्षार्थी मनोगत

Voordat ik in contact met Geeta Pariwar kwam miste ik het volgende:
* Ik was bijna 50 yaar oud en was helemaal niet Spiruteel
* Ik was aan het zoeken naar gepaaste vrijwilligerswerk. Nadat ik lang in corporate wereld had gewerkt tot mijn 50ste wilde ik iets terug geven aan de maatschapij
* Ik wilde weer iets doen met mijn singing
* Ik had drukke dagen in De Nederlands en dan helemaal niks te doen in Dubai

Nadat ik nu een lid van Geeta Pariwar ben heb ik opeens alles kunnen vinden op een plek here bij Geeta Pariwar kunnen vinden. Want Geeta pariwar werkt met "Geeta padhen, padayein aur Jeevan mein laayein" ॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

Ik begon als Geeta Sadhak in Maart 2021 en heb Geeta les gevolgd op Zoom vanuit Nederland, Dubai en in India. Ik heb toen gezien dat Geeta pariwar met vrijwilligers werkte dus begon ik mee te helpen als geeta class coordinator en als tech die zoom class draait en ook mee helpt het certificaten uit te reiken. Ik leer nu nog Geeta en ik heb veel geleerd bij mijn nieuwe familie en nog veel te leren. Ik had nooit bedacht dat ik enige shloka kunnen zeggen zonder een boek en nu heb ik al drie adhyay van Geeta goed kunnen leren en laten me certificeren als Geeta Gignasu.

Met deze wil ik graag Swami Govinddev Giri ji bedanken voor zijn initiatieve en iedereen die hiermee helpt om messages van Krishna Bhagwan naar mensen te verspreiden.

Het is ongelofelijk om te zien hoeveel mensen Geeta pariwar elke dag helpt die kennis willen opdoen van Bhagwat Geeta om hun leven beter te maken die in India zijn en die ver van India zijn toch zijn ze nog het beste opgeleid via deze initiative.

Anjana Saxena

समृद्ध व सशक्त भारत निर्माण करण्यासाठी कमीत कमी एक तरी विचार सरणी अशी असणे गरजे चे आहे जी सर्वमान्य होऊन संपूर्ण भारता च्या जनमानसात सहज पोहोचू शकेल . यामुळे आपल्यात वैचारिक समानता निर्माण होणार आणि पुढे जाऊन आपण एक सूत्रात जुडू शकू. या संदर्भात " गीता परिवार " चे प्रयत्न प्रशंसनीय आहे. हे जरी कठीण वाटत असले तरी अशक्य नाही. ज्या प्रमाणे रक्त वाहिनीच्या मदती ने रक्त आपल्या शरीरा च्या प्रत्येक भागात सहज पोहोचते व याचे संचालन आपले हृदय करीत असते त्या प्रमाणे विशाल भारतीय समाजात स्वयं भगवान श्रीकृष्ण च्या मुखातून प्रकट झालेली पवित्र गीता पोहविण्याचे पुण्यकार्य गीता परिवार करीत आहे. या च्या हृदय स्थानी प. पू. स्वामी जी आहेत. गीता विशारद श्री आशु भैया व सन्माननीय श्री संजय भैया मालपाणी सारखे अनेक कठोर परिश्रमी व्यक्ति हे उद्दिष्ट गाठण्यासाठी योग्य दिशेने वाटचाल करीत आहेत अशी माझी धारणा आहे. जवळपास एक वर्ष विभिन्न स्तरावर अध्ययनरत असतांना मला असे दिसून आले कि गीता परिवार "ज्ञान आणि विज्ञान "या दोन्ही गोष्टी चा योग्य वापर करीत आहे. आपल्या देशात अनेक भाषा- भाषी राहतात म्हणून अध्यापन ही वेगवेगळ्या भाषां मध्ये केले जाते. गीता शिकत असताना परीक्षा घेउन प्रशिक्षक या पदावर नेमणूक करणे फारच प्रशंसनिय आहे. वेळोवेळी होणाऱ्या अर्थ विवेचना मुळे सर्वांना गीता जास्त छान समजते व शिकण्याची गोडी ही वाढते. बरेच लोक आपल्या नातलगांना ऑनलाईन गीता शिकण्यास प्रोत्साहित करतात । सर्वच प्रशिक्षक उत्तमोत्तम आहेत ब ते शब्दां चे उच्चार शुद्धते ने करण्यास लक्ष पुर्वतात महर्षी पाणिनीं च्या संस्कृत व्याकरणा चा आधार घेउन जाणकारांनीमोठ मोठ्या शब्दांचे संधि विग्रह करून अत्यंत सोपी भाषेत सांगितले आहे. ह्रस्व-दीर्घ व आघात यांचे दाखले श्लोकां च्या खाली दिलेले आहेत . याचा विद्यार्थ्यां ना खूप फायदा होतो . गीता परिवारशी जुडलेल्या संगणक शास्त्रद्यांनी आधुनिक तंत्रज्ञाना चा वापर करुन नव नवे सॉफ्टवेयर बनविले आहेत ज्याचा ऑनलाईन शिक्षण वर्गाला खूपच फायदा होतो आहे. गीते चे ऑन लाईन शिक्षण आम्हाला वरदान च ठरले आहे . ऑनलाईन वर्ग सुव्यवस्थित चालविण्यात टेक्निकल स्टॉफ पारंगत आहेत. अश्या प्रकारे गीतेचे शिक्षण आमच्या पर्यंत पोहचविण्याबद्दल आम्ही संपुर्ण गीता परिवारा चे सदैव ऋणी असणार. गीतापरिवारा च्या अनेक छान गोष्टींपैकी मला एक गोष्ट फारच आवडली ती म्हणजे "आपसात बंधुत्व भाव " . लहान मोठ्या चा भेदभाव न ठेवता एक मेकांना प्रेमाने ताई किंवा दीदी आणि दादा किंवा भैया असे संबोधन वापरण्या ची प्रथा . गुरूवर्यांचे आशीर्वादा ने सर्वांच्या मेहनती ला नक्कीच यश येणार . भगवंता च्या असीम कृपेने एक दिवस गीता परिवारा ची ख्याति सम्पुर्ण जगात नव नवे कीर्ती मान स्थापित करणार. शुभं भवतु !

मुकुंद श्रीधर शिलेदार ,
रायपुर

I had joined Geeta Parivar as a L-1 Sadhaka in April 2021, just to get an idea about Geeta Santha Varga & of course about Shreemad Bhagvad Geeta. But after attending the L-1 Classes, I liked it & got addicted to all the programms of Geeta Parivar. Now I am a Trainer in L-2, also giving Seva as Examiner for Geeta Jignasu & Geeta Pathaka exams, etc. It is almost impossible now to refrain from it. We all together will work to spead the holy messages of Shreemad Bhagvad Geeta all over the world. Jai Shree Krishna.

-Dr. Sushanta Kumar Mohapatra, Lucknow

ಮನೋಗತ: ನಮ್ಮದು ಈಗ ನಿವೃತ್ತ ಜೀವನ.ಮಕ್ಕಳ ವಿದ್ಯಾಭ್ಯಾಸ ಮುಗಿದು ಅವರು ಉದ್ಯೋಗದ ನಿಮಿತ್ತ ಹೊರಗಿರುವುದ ರಿಂದ ಈಗ ನಾವಿಬ್ಬರೇ ಮನೆಯಲ್ಲಿರುವುದು.ನನಗೆ ಭಗವದ್ಗೀತಾ ಕಲಿಕೆಯಿಂದ ಮನಸ್ಸಿಗೆ ತುಂಬಾ ನೆಮ್ಮದಿ ಸಿಕ್ಕಿದೆ.ಗುರುಮುಖೇನ ಯಾವುದೇ ವಿಷಯವನ್ನು ಕಲಿತರೆ ಅದು ಕಬ್ಬಿಣದ ಕಡಲೆ ಅಲ್ಲವೆಂಬುದು ನನಗೆ ಈಗ ಧೃಡವಾಗಿದೆ ಏಕೆಂದರೆ ಹಿಂದೆ ಒಮ್ಮೆ ಗೀತೆಯ ಪುಸ್ತಕ ತೆಗೆದು ನಾನೂ ಕಲಿಯಲು ಪ್ರಾರಂಭಿಸಿ ಅದು ತುಂಬಾ ಕಷ್ಟವೆಂದು ತಿಳಿದು ಪುಸ್ತಕವನ್ನು ಬದಿಗಿಟ್ಟಿದ್ದೆ.ಈ ಕ್ಲಾಸುಗಳಿಗೆ ಸೇರದೇ ಇರುತ್ತಿದ್ದರೆ ನನಗೆ ತುಂಬಾ ನಷ್ಟವಾಗುತ್ತಿತ್ತೆಂದು ಈಗ ನನಗೆ ಅನಿಸುತ್ತದೆ.
ಹೇಳಿಕೊಡುವವರ ನಗುಮುಖ,ಸ್ಪಷ್ಟ ಉಚ್ಚಾರ ಭಾರೀ ಖುಷಿ ಕೊಟ್ಟಿದೆ

Revathi Joshi
Karkala Tal., Udupi Dist.

ಭಗವದ್ಗೀತೆ ಕಲಿಕೆ ನನ್ನ ಜೀವನದ ಒಂದು ಅಮೋಘ ತಿರುವು.ಒಂದೊಂದು ಅಧ್ಯಾಯ ಮುಗಿಯುವ ವೇಳೆಗೆ ಆಗುವ ಆನಂದದ ಅನುಭವ ವರ್ಣನಾತೀತ.ಆ ಆನಂದವನ್ನು ಅನುಭವಿಸಿ ನೋಡಬೇಕೇ ಹೊರತು ಶಬ್ದಗಳಲ್ಲಿ ಹೇಳಲು ಆಗುವುದಿಲ್ಲ .ನನ್ನ ಒಂದು ಬದಲಾವಣೆಯನ್ನು ಹಂಚಿಕೊಳ್ಳಲು ಇಷ್ಟಪಡುತ್ತೇನೆ.ನಾನು ಎಲ್ಲರೊಂದಿಗೆ ಮಾತನಾಡಲು ಸ್ವಲ್ಪ ಹೆದರುತ್ತಿದ್ದ ನನ್ನಲ್ಲಿ ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸದ ಕೊರತೆ ಇತ್ತು.ನನ್ನಲ್ಲಿ ಒಂದು ದಿವ್ಯ ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸವನ್ನು ಭಗವದ್ಗೀತೆ ಕಲಿಕೆಯ ಸಮಯದಲ್ಲಿ ಕಂಡುಕೊಂಡಿದ್ದೇನೆ.ನಾನಷ್ಟೇ ಅಲ್ಲ ನನ್ನನ್ನು ಸದಾ ಗಮನಿಸುವ ನನ್ನ ಆಪ್ತರು ಕೂಡ ನನ್ನಲ್ಲಿ ಹೇಳಿದ್ದಾರೆ ನಿನ್ನಲ್ಲೇನೋ ಮೊದಲಿಲ್ಲದ ಬದಲಾವಣೆ ಆತ್ಮವಿಶ್ವಾಸ ನಮಗೆ ಎದ್ದು ತೋರುತ್ತಿದೆ ಎಂದು.ಹೆಜ್ಜೆ-ಹೆಜ್ಜೆಗೂ ಶ್ರೀಕೃಷ್ಣಪರಮಾತ್ಮ ನನ್ನನ್ನು ಸಂರಕ್ಷಿಸುವ ಅನುಭವ, ಆದ್ದರಿಂದ ನಾನು ಇಲ್ಲಿ ಏನುಹೇಳಬಯಸುತ್ತೇನೆ ಎಂದರೆ ಭಗವದ್ಗೀತೆಯನ್ನು ಓದಿ ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು ಪರಿವರ್ತಿತವಾಗಿ ತಮ್ಮ ಬದುಕುವ ರೀತಿಯನ್ನು ಬದಲಿಸಿಕೊಳ್ಳಿ ಮತ್ತು ಆನಂದದಿಂದ ಜೀವನ ನಡೆಸಿ.

Sujata Madhu Ashrit
Bangalore

ಗೀತಾ ಪರಿವಾರದ ಈ ತರಬೇತಿ ಶಿಕ್ಷಣ ನನಗೆ ದೊರೆತ ಅನರ್ಘ್ಯ ರತ್ನವಾಗಿದೆ.
ಶುದ್ಧ ಉಚ್ಚಾರಣೆ ಕಲಿಸುವ ವಿಧಾನ ಅನುಪಮವಾದದ್ದು. ನಾನು ಗೀತೆಯನ್ನು ಗುರುಗಳು ಹೇಳಿಕೊಟ್ಟಂತೆ ಲಯಬದ್ಧವಾಗಿ ಪಠಿಸಿದಾಗ ನನ್ನಲ್ಲಿ ಏಕಾಗ್ರತೆ ಮೂಡಿ,ಮನಸ್ಸು ಉಲ್ಲಸಿತವಾಗಿ ,ದಣಿವು ಶೀಘ್ರವಾಗಿ ಶಮನಗೊಂಡಿದೆ. ಅರ್ಥ ವಿವೇಚನೆಯಿಂದ ನಾನು ಜೀವನದ ಬಗ್ಗೆ ಗೌರವ , ಕರ್ತವ್ಯಪ್ರಜ್ಞೆ, ಸಹಿಷ್ಣುತೆ ಮತ್ತು ಸಮಚಿತ್ತ ಭಾವ ಪಡೆಯುತ್ತಲಿರುವೆ.
ನಿತ್ಯ ಪಠಣ ಮಾಡಿ,ಜೀವನದಲ್ಲಿ ಅಳವಡಿಸಿಕೊಂಡು "ಸ್ಥಿತಪ್ರಜ್ಞತೆ" ಸಾಧಿಸುವ ಗುರಿ ನನ್ನದಾದಿದೆ

Dr. Shrinivas Hebbal.
Dharwad, Karnataka

ଗୀତା ପରିବାର ସହିତ ଯୋଡି ହୋଇ ମୁଁ ନିଜକୁ ଭାଗ୍ୟବାନ ମନେ କରୁଛି। ପ୍ରଥମେ ଶୁଦ୍ଧ ଭଗବଦ୍ ଗୀତା ପଢିବା ଶିଖିଲି, ତା ପରେ ଏବେ ପଢିବା ଶିଖାଉଛି। ବହୁତ ଆନନ୍ଦ ଆସୁଛି। ଆସନ୍ତୁ ଆମେ ସମସ୍ତେ ମିଶି ଗୀତାର ପ୍ରଚାର ପ୍ରସାର କରିବା ଏବଂ ସମସ୍ତ ବିଶ୍ୱକୁ ଗୀତାମୟ ବନାଇବା। ଜୟ ଶ୍ରୀକୃଷ୍ଣ ।

Dr. Sushanta Kumar Mohapatra

భగవద్గీత లక్షలాది మందికి చేరడం కోసం మహాభారత యుద్ధం ఒక కారణం అయితే, ఈ మహమ్మారి (COVID) దురదృష్టం అనిపించినా, గీతా పరివార్ ద్వారా అది అదృష్టముగా సమముగా మారినది. అంకితభావంతో నిమగ్నమైన ఉపాధ్యాయుల ద్వారా ఏపంచవ్యాప్తంగా అన్ని వయస్సుల మరియు అన్ని వర్గాలకు చెందిన లక్షలాది మందికి గీతా పరివార్ భగవద్గీతను చేరువ చేసినది అని చెప్పవచ్చు. ఇంతవరకు చదవకుండా పడి ఉన్న పుస్తకంగా లేదా కొంత చదివి లేదా విని మర్చిపోయినట్లుగా ఉన్నదైన భగవద్గీత ఇప్పుడు శ్లోకాలను సరిగ్గా ఎలా చదవాలో నేర్చుకుంటూ వాటి అర్థాలను తెలుసుకొనుటకు ఇప్పుడు చాలా అభ్యాసకులు ఎంతో ప్రేరేపితమయ్యారు.

నేను మొదట్లో మొదటి స్థాయికి ఇంగ్లీష్ వెర్షన్‌లో చేరాను. సరైన ఉచ్చారణ మరియు దాని మూల భాష సంస్కృతంతో సంబంధాన్ని పొందడానికి భారతీయ భాషలో నేర్చుకోవడం ఉత్తమమని గ్రహించి తదుపరి స్థాయికి తెలుగులోకి మారాను.
గీతా పరివార్ వారాంతాల్లో వివరణ సెషన్‌లను అందిస్తున్నప్పటికీ, కేవలం శ్లోకాలను పఠించడం చాలా చికిత్సాపరమైనది . రోజూ 40 నిమిషాల గీతా పఠనం దినచర్యలో భాగమైనది.

ఎక్కడా ,ఏ ఇతర సంస్థ ఉచితంగా, అందరికీ అందుబాటులో ఉండేలా స్వచ్ఛంద సేవను గీతా పరివార్ లాగా అందిస్తున్నట్లు తెలియదు. పతి అధ్యాయం యొక్క వ్యవధి, అంతరం, ప్రవాహం, అభ్యాసకులు తమ సౌలభ్యం మేరకు ఈ సెషన్‌లకు హాజరయ్యే విధంగా షెడ్యూల్ చేయబడింది. కంఠస్తీకరణ చేయుట మరియు దశలవారీగా గీతాభ్యాసం (level wise) చేసిన వారికి సర్టిఫికేట్‌లను అందించి పోత్సహించడంతో పాటు, గీతా పరివార్ సౌజన్యంతో వివిధ భాషలలో ఏర్పరిచిన ఈ కోర్సులో పాల్గొనేవారు పత్యక్ష మరియు పరోక్ష రూపంలో సేవ చేస్తూ, తద్వారా వారి ఇతర నైపుణ్యాలను కూడా అభివృద్ధి చేసుకోగలుగుతున్నారు.

అత్యంత శక్తివంతమైన ఈ భగవద్గీతా శ్లోకాలను నేర్చుకుని, పఠిస్తూ సంవత్సరం కంటే ఎక్కువ కాలం పాటు గీతా పరివార్‌తో
కనెక్ట్ చేసి ఈ కోర్సులో పాల్గొన్న వారికి, వారి గురువుల ద్వారా భగవద్గీత చదవడం మరియు జీవితానికి అన్వయించడం ద్వారా సంతోషకర, సమతుల్య మరియు ఉద్దేశపూర్వక జీవితాన్ని గ్రడపడానికి పేరేపించడంలో గీతా పరివార్ వారి నిస్వార్థ సేవ ఎంతో దోహద పడుతుంది. వారికి నా కోటి కోటి అభినందనలు మరియు కృతజ్ఞతలు .

Ravi V
Navi Mumbai

हा मार्ग सुखद गीतेचा

सामान्य अशी मी गृहिणी नित लीन गजानन चरणी।
लाभला प्रसाद म्हणुनी, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।१।।

अष्टादश अध्यायांची, व्यासोक्ति सातशे श्लोकांची।
संवाद कृष्णार्जुनाचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।२।।

उपनिषदांचे हे सारं, गूढ ज्ञानाचे भांडार।
अभ्यास सहा शास्त्रांचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।३।।

गीताई विनोबाजींची, ती ज्ञानेश्वरी ज्ञानाची।
उलगडे अर्थ जिवनाचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।४।।

कृपा श्री गोविंददेव गुरूंची, साधकांवरी ही साची।
गीता शिकणे अन् शिकविण्याचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।५।।

थोर संजयजी, आशुजी, त्या मधुर वाणीमय काकी (सुवर्णा,वंदना)
अर्थाचा, विवेचनाचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।६।।

उत्कृष्ट व्यवस्थापन ते, सेवामयी सहकाऱ्यांचे।
जणू आशिष भगवंतांचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।७।।

जोडले या परिवारात, त्या पुरुषोत्तम मासात।
सापडला आनंदाचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।८।।

गौरी नि विद्या, ज्योती, लाभले गुरू मजप्रति।
संग अनुराधा पथिकेचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।९।।

ह्रस्व, दीर्घ नि आघात, उच्चार शुद्ध अन् स्पष्ट।
त्या व्याकरणाच्या नियमांचा, हा मार्ग सुखद गीतेचा।।१०।।

Mrs. Suvarna Vinayak Niwate
Goregaon, Mumbai

પહેલી વાત તો એ જ કે બે દિવસમાં જ, અંદરની અને અંતરની અદભૂત શાંતિનો અનુભવ થયો...અને પછી તો અલૌકિક અને દૈવી આનંદની અનુભૂતિ થઈ. જે મારા આ એશી વર્ષના જીવન દરમ્યાન ક્યારેય નથી થઈ. ભૌતિક જીવન તો જીવ્યો, પણ હવે આધ્યાત્મિક જીવન "જીવવાની" તક મળી. જાણતો તો હતો ઘણું, પરંતુ જીવતો ન્હોતો.
ભગવાન શ્રીકૃષ્ણએ જાણે કે આવતા જન્મ માટેનું ભાતું બનાવવામાં મને જોડી દીધો. લેવલ 1 ના ગુરુજી શ્રીનીતિનભાઈએ એ ભાતામાં પ્રેમની અને આત્મીયતાની મીઠાશ ભેળવી. એમની શીખવવાની પદ્ધતિ ખૂબ જ સહજ અને સરળ. ક્યારેક તો એવું લાગ્યું કે મારી ખોપરીમાં નવું મગજ અને પાંસળીઓમાં નવું હૃદય transplant થયાં.
ખરેખર, ગીતાનું ગાયન એ પેલા વાંસળી વાદક કૃષ્ણનું જ કામ. નહિતર, આટલું સુરિલું, મીઠું, માખણચોરના માખણ જેવું હૃદય સોંસરવું સરકી જાય એવું લીસ્સુ, મુગ્ધ અને શરીર નહિ પણ આત્મા સમજી શકે તેવું ગૂઢ, ન હોય

Kishorechandra Joshi
Gujarat

*जुलाई एक 21;के पहले तक भगवत गीता एक ऐसा ग्रंथ जिसे पूजा के स्थान पर रखें और पिक्चरों में कोर्ट रूप में शपथ लेने के लिए प्रयोग की जाने वाली कोई चीज के रूप में ही देखा था ।उसके बाद मेरी गीता यात्रा प्रारंभ हुई ,फिर तो जैसे मैंने एक अलग ही दुनिया में कदम रख दिया ।इस गीता यात्रा में मुझे समय की पाबंदी (punctuality),समूह भावना(Team sprit), निस्वार्थ सेवा भाव ,सबके लिए सम्मान और गीता ज्ञान की अमूल्य धरोहर मिल रही है अब किसी के लिए कोई राग द्वेष नहीं है अगर कोई बात बुरी लगती है या किसी बात की चिंता होती है तो गुस्सा या नफरत के स्थान पर गीता के श्लोक याद आ जाते हैं और मैं उन्हें गुनगुनाने लगती हूं और समस्याओं का समाधान पा जाती हूँ ।काश ये यात्रा जीवन में पहले से ही प्रारंभ हो जाती ,खैर अब तो बस यही अभिलाषा है कि अधिक से अधिक लोगों को इस अनुपम औषधि (गीता जी) से लाभान्वित करवा सकूं ।जय श्री कृष्णा

श्रद्धा मिश्रा
Pune

జై శ్రీ కృష్ణ.. ముందుగా గీతా పరివార్ వారికి హృదయపూర్వక ధన్యవాదాలు.

ఎన్నో జ్ఞాపకాలు, ఎన్నో అనుభవాలు ఏర్పడ్డాయి ఈ గీతాయజ్ఞంలో పాల్గొన్నప్పటి రోజు నుంచి. నాలో వ్యక్తిగతంగా కూడా చాలా మార్పు వచ్చింది. ఇంతకుముందు చిన్న చిన్న విషయాలకి కోపం వస్తూండేది, కానీ ఇప్పుడు నిధానంగా / ఓపికగా ఆలోచించి ప్రతిస్పందించడం నేర్చుకున్నాను.

మనం మన్న పయత్నలోపం లేకుండా, 'గీత'ని శద్ధగా చదువుతూ చదువుతూ ఉంటే, ఆ భగవానుని దయతో మన మార్గం సుగమం అవుతుంది ఇంకా అలాగే సమాజంలో ధార్మిక భావన వృద్ధి చెందుతుందని నా అభిప్రాయం.

మట్టి పేరుకున్న వెదురు బుట్టలో బావి నుంచి ఇంటికి నీరు తేవడానికి పలుమార్లు ప్రయత్నించినా నీరు అయితే తేలేకపోవచ్చు గాక, కానీ ఆ పేరుకున్న మట్టి శుభ్రమయ్యే వెదుర్రు బుట్ట మాతం తళతళ మెరుస్తుంది. మన పరిస్థితి కూడా అంతే కదా.

ఈ భావజాలాన్ని మన జీవితాలకి అన్వయించుకుంటే శ్రీమద్భగవద్గీత అనే నిచ్చెన ద్వారా అరిషడ్వర్గాలు, ఈర్ష్యా అసూయ రాగద్వేషాలకు అతీతంగా సాత్విక ప్రవృత్తి మార్గం లోకి పయనించ గలుగుతాము.

'గీత నేర్చుకోండి - రాత మార్చుకోండి' అంటూ గీతా పరివార్ వాళ్ళు చేపట్టిన ఈ యజ్ఞం నిర్విరామంగా కొనసాగుతూ ఉండాలని.. ఈ పూతోట లో ఇంకా ఎన్నో మరెన్నో పుష్పాలు విరబూయాలని.. మరొక్కసారి గురువులందరికి కృతజ్ఞతలు తెలుపుకుంటూ, ఆ శ్రీ కృష్ణ భగవానుని కృప ఇలాగే మనందరి మీద సదా ఉండాలని ఆకాంక్షిస్తూ..

Satyanarayana Nalla
Suryapet

Volunteers' Brigade

PATRON
P. P. SWAMI JI SHRI GOVINDDEV GIRI JI MAHARAJ

CONCEPT CHIEF
Dr. Sanjay Malpani

PROGRAM DIRECTOR
Dr. Ashu Goyal

PRINCIPAL TRAINER
Sau. Suvarna Malpani, Sangamner

PROGRAM COORDINATORS
Ms. Jyoti Shukla
Ms. Rupal Shukla
Ms. Kavita Verma

TRAINER'S TRAINING DEPARTMENT
Smt. Vijaya Godbole, Dehradun
Shri Shrinivas Warnekar, Nagpur
Sau. Vandana Warnekar, Nagpur
Sau. Anita Sangamnerkar, Ayodhya
Shri Vikas Vaidya, Pune

IT & SOFTWARE DEPARTMENT
Shri Pradeep Rathi, Pune
Shri Vivek Sinha, USA
Shri Gagan Holani, Mumbai
Shri Vednath Mathur, Delhi
Smt. Minaxi Shah, Ahmedabad
Shri Ashish Tiwari, Chitrakoot
Shri Manish Tomar, Morana

BATCH COORDINATOR DEPARTMENT
Shri Rahul Pore, Pune
Smt. Anshu Garg, Delhi

TRAINER MANAGEMENT DEPARTMENT
Shri Vivek Vij, Moga
Smt. Sheetal Salke, Pune
Smt. Mansi Ekbote, USA
Smt. Anita Ravishankar, Pune

TECHNICAL ASSISTANT DEPARTMENT
Smt. Manisha Bharadwaj, Abu Road
Smt. Mayuri Mathapati, USA
Shri Narendra Kotak, Pune
Smt. Vijaya Muchhal, USA
Shri Suraj Sharma, UAE
Shri Dinesh Chawla, Chennai
Smt. Alaknanda Kulkarni, Pune

CREATIVE WRITING DEPARTMENT
Shri Vimal Jain, Calcutta
Shri Ghanshyam Das, New Delhi
Shri Swaminathan, Nasik

LITERATURE PUBLICATION DEPARTMENT
Smt. Pooja Goyal, Lucknow (Compilation)
Shri. Suresh Kumbhar, Ugar BK (Kannada)
Smt. Malathi Kini, Mangalore (Kannada)
Smt. Shruthi Kadagaonkar, Pune (Kannada)
Smt. Vidya Rao, Jalna (Kannada)
Smt. Ragini Polisetty, Guntur (Telugu)
Shri Gopalratnam Ji, Tiruchirapalli (Tamil)
Smt. Monika Bagdi, Chennai (Tamil)
Smt. Ramesh Kumar Rateria, Calcutta (Bangla)
Shri. Pramod Barik, Malkangiri (Odia)
Shri Vivek Vijayan, Kottakkal (Malayalam)
Ms. Hiral Patel, Satara (Gujarati)
Shri. Narayan Shete, Coimbatore (Grammar)
Shri. Suresh Garg, Rishikesh (Grammar)

GROUP COORDINATORS DEPARTMENT
Smt. Kavita Taparia, Ahmedabad
Smt. Smita Mundada, Pune
Smt. Saroj Saboo, Hyderabad
Smt. Punita Prasad, Chennai
Smt. Neeta Survyavanshi, Bhuj
Smt. Nisha Keny, Mumbai
Shri. Hanuman Prasad Baheti
Smt. Vini Maheshwari, Mumbai
Shri Geet Govind,Sahu Jagdalpur
Shri Sunil Kapdi, Mumbai

EXAMINATION DEPARTMENT
Shri Arun Taparia, Lakhimpur Khiri
Shri Hemant Parmar, Mumbai
Shri Santosh Singh,

BACK OFFICE DEPARTMENT
Shri Nilesh Pathade, Sangamner
Shri Datta Bhandurge, Sangamner
Shri Prasad Shete, Sangamner
Shri Swapnil Gaikwad, Sangamner
Shri Ankit Vaghmare, Sangamner

BACK OFFICE DEPARTMENT
Ms. Vaishnavi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Janhvi Raj Sahu, Lucknow
Ms. Bhagyashri Pawnikar, Chhindwara
Mr. Khitishprasad Mohapatra, Sangamner

TELE & MAIL HELPLINE DEPT.
Shri Siddharth Havelia, Delhi
Smt. Sarika Dhaundiyal, Delhi
Ms. Priya, Delhi
Ms. Geet, Delhi
Ms. Kajal Srivastava, Delhi

LEGAL DEPARTMENT
Smt. Priyanka Havelia, Delhi

CLASS MONITORING DEPARTMENT
Smt. Shraddha Raodeo, Hyderabad
Smt. Namita Mehra, Mumbai
Smt. Anjali Joshi, Mumbai
Smt. Renu Chaudhary, Hyderabad

CHINTANIKA COORDINATORS
Smt. Nirmala Maru, Kota
Shri Harinarayan Vyas, Hyderabad
Smt. Kavita Mandhane, Parbhani

VIVECHAN COORDINATORS
Shri Gopal Singh Nathawat, Bikaner
Smt. Neeta Aspat, Mumbai
Shri Santosh Singh, Indore
Shri Suresh Vyas, Bikaner
Shri Deepak Gupta,

GEETA PRACHARAK COORDINATORS
Shri Suresh Dadhich, Mumbai
Devendra Pathak Ji
Manohar Lal Dwivedi Ji



आगामी कार्यक्रम

उपक्रम -

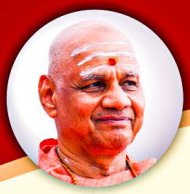
13 मार्च - गीता पाठक परीक्षा
20 मार्च - गीता जिज्ञासु परीक्षा
27 मार्च - गीता पथिक परीक्षा
17-18 मार्च - होलिकोत्सव अवकाश
8 अप्रैल - अप्रैल स्तर - 2 स्वागत समारोह
10 अप्रैल - राम नवमी अवकाश
11 अप्रैल - अप्रैल स्तर - 1 स्वागत समारोह
30 अप्रैल - फरवरी स्तर - 2 समापन समारोह
30 अप्रैल - गीता जिज्ञासु परीक्षा

अतिरिक्त कक्षायें -

11 मार्च - गीता जिज्ञासु अतिरिक्त कक्षा - 16वाँ अध्याय
14 मार्च - गीता पथिक अतिरिक्त कक्षा - प्रथम अध्याय
15 मार्च - गीता पथिक अतरिक्त कक्षा - तृतीय अध्याय
16 मार्च - गीता गुञ्जन अतिरिक्त कक्षा - 12वाँ अध्याय
21 मार्च - गीता पथिक अतरिक्त कक्षा - चतुर्थ अध्याय
22 मार्च - गीता पथिक अतरिक्त कक्षा - 5वाँ अध्याय
23 मार्च - गीता पथिक अतरिक्त कक्षा - 6वाँ अध्याय
24 मार्च - गीता पथिक अतरिक्त कक्षा - 7वाँ अध्याय



॥ श्रीहरिः॥



Geeta Pariwar's

P.P Shri Govind Dev Giri Ji Maharaj
(Founder President, Geeta Pariwar)

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

ŚRĪMAD-BHAGAVADGĪTĀ
CERTIFICATION PROGRAMME

for Geeta Devotees

Geeta devotees who learn how to recite Śrīmadbhagavadgītā with the rules of Anusvāra, Visarga & Āghāta can achieve the following certificates.

गीता प्रशस्तिपत्रक

GĪTĀ GUÑJANA

GĪTĀ JIJÑĀSU

GĪTĀ PĀṬHAKA

GĪTĀ PATHIKA

GĪTĀVRATĪ

GĪTĀ PRAVĪṆA

GĪTĀ PĀRAṄGATA

GĪTĀ VIŚĀRADA

GĪTĀ PRĀJÑA

GĪTĀ MANĪṢĪ

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन

Learngeeta.com

FOR GEETA TRAINEES –

LEVEL 1 - 20 SESSIONS (CHAPTERS 12TH AND 15TH)

1. **Gītā Guñjana** – Geeta devotees who have learnt how to correctly recite chapters 12th and 15th and passed the exam shall be awarded Gītā Guñjana certificate by email.

LEVEL 2 - 40 SESSIONS (CHAPTERS 16TH, 9TH, 14TH AND 17TH)

2. **Gītā Jijñāsu** – Geeta devotees who have correctly memorized three chapters (12th, 15th and 16th) and passed the exam shall be awarded the title of Gītā Jijñāsu and a certificate by email/post.
3. **Gītā Pāṭhaka** – Geeta devotees who have correctly memorized any six chapters and passed the exam shall be awarded the title of Gītā Pāṭhaka and a certificate by email/post.

LEVEL 3 - 60 SESSIONS (CHAPTERS 1ST, 3RD, 4TH, 5TH, 6TH & 7TH)

4. **Gītā Pathika** – Geeta devotees who have correctly memorized any twelve chapters and passed the exam shall be awarded the title of Gītā Pathika and a certificate by email/post.

LEVEL 4 - 80 SESSIONS (CHAPTERS 2ND, 8TH, 10TH, 11TH, 13TH & 18TH)

5. **GĪTĀVRATĪ** – Geeta devotees who have correctly memorized the entire Śrīmad-Bhagavadgītā (18 chapters) and passed the exam shall be awarded the title of Gītāvratī and they shall be felicitated in a special ceremony.

FOR GEETA TRAINERS –

6. **Gītā Pravīṇa** – Honorable trainers who have successfully trained 150 Geeta devotees to clear Gītā Pāṭhaka exam shall be awarded the title of Gītā Pravīṇa and a certificate.
7. **Gītā Pāraṅgata** – Honorable trainers who have successfully trained 100 Geeta devotees to clear Gītā Pathika exam shall be awarded the title of Gītā Pāraṅgata and a certificate.

FOR GEETA PREACHERS –

8. **Gītā Viśārada** – Gītā Pāraṅgata who has given 50 interpretation sessions on Geeta shall be awarded the title of Gītā Viśārada and a certificate.
9. **Gītā Prājña** – Gītā Viśārada who has passed the exam of Sridhari Vyakhya/ Sadhaka Sanjivani/ Jnyaneshwari shall be awarded the title of Gītā Prājña and a certificate.
10. **Gītā Manīṣī** – One who has imbibed the essence of Geeta into the fabric of his/her life shall be awarded the title of Gītā Manīṣī.



॥ श्रीहरिः॥



प.पू. स्वामी श्रीगोविंददेवगिरिजी महाराज
(संस्थापक अध्यक्ष, गीता परिवार)

गीता परिवार

प्रणीत

गीताप्रेमी - साधकों के लिए

॥ गीता पढ़ें, पढ़ायें, जीवन में लायें ॥

श्रीमद्भगवद्गीता प्रशस्तिपत्रक योजना

जो गीताप्रेमी साधक अनुस्वार, विसर्ग आघात पद्धति से गीता सीख एवं कंठस्थ कर रहें हैं,
वह निम्न प्रक्रियाओं में सम्मिलित होकर विभिन्न प्रशस्तिपत्र प्राप्त कर सकते हैं

गीता प्रशस्तिपत्रक

- गीता गुञ्जन
- गीता जिज्ञासु
- गीता पाठक
- गीता पथिक
- गीताव्रती
- गीता प्रवीण
- गीता पारङ्गत
- गीता विशारद
- गीता प्राज्ञ
- गीता मनीषी

LEARN GEETA
तस्मात् योगी भवार्जुन
Learngeeta.com

गीता प्रशिक्षार्थियों के लिये –

स्तर 1 प्रशिक्षण वर्ग (L1) – 20 सत्र (12वाँ एवं 15वाँ अध्याय)

1) गीता गुञ्जन – 12वें एवं 15वें अध्याय की अनुस्वार-विसर्ग पद्धति से शुद्ध पठन की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीताप्रेमियों को 'गीता गुञ्जन' प्रशस्तिपत्र ई-मेल द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 2 प्रशिक्षण वर्ग (L2) – 40 सत्र (16, 9, 14, 17वाँ अध्याय)

2) गीता जिज्ञासु – 12,15 एवं 16वाँ कुल 3 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले साधकों को 'गीता जिज्ञासु' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

3) गीता पाठक – कुल 6 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीता पाठक' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 3 प्रशिक्षण वर्ग (L3) – 60 सत्र (1, 3, 4, 5, 6, 7वाँ अध्याय)

4) गीता पथिक – कुल 12 अध्याय शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीता पथिक' उपाधि से विभूषित किया जायेगा एवं प्रशस्तिपत्र ई-मेल / पोस्ट द्वारा प्रदान किया जायेगा।

स्तर 4 प्रशिक्षण वर्ग (L4) – 80 सत्र (2, 8, 10, 11, 13, 18वाँ अध्याय)

5) गीताव्रती – सम्पूर्ण भगवद्गीता (18 अध्याय) शुद्ध कण्ठस्थ कर परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले गीता साधकों को 'गीताव्रती' उपाधि से विशेष कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा।

गीता प्रशिक्षकों के लिये –

6) गीता प्रवीण – 150 साधकों को 'गीता पाठक' प्रशिक्षण देकर उत्तीर्ण करवाने वाले आदरणीय प्रशिक्षक को 'गीता प्रवीण' उपाधि एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जायेगा।

7) गीता पारङ्गत – 100 साधकों को 'गीता पथिक' प्रशिक्षण देने वाले आदरणीय प्रशिक्षक को 'गीता पारङ्गत' उपाधि एवं प्रशस्तिपत्र प्रदान किया जायेगा।

गीता प्रचारकों के लिये –

8) गीता विशारद – गीता पर 50 व्याख्यान देने वाले 'गीता पारङ्गत' को 'गीता विशारद' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

9) गीता प्राज्ञ – गीता - श्रीधरी व्याख्या / साधक सञ्जीवनी / ज्ञानेश्वरी की परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले 'गीता विशारद' को 'गीता प्राज्ञ' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।

10) गीता मनीषी – गीता ही जीवन ग्रन्थ बनाने वाले तद्रूप चिंतक को 'गीता मनीषी' उपाधि से अलंकृत किया जायेगा।



List of GĪTĀ VRATĪES

Sādhakas who memorised full 18 chapters of Bhagvadgītā and passed Gītāvratī exam.

1. Akash Verma, Lucknow
2. Amol Gopal Kabra, Latur
3. Anitha Hurgat, Dharmabad
4. Anjali Mundra, Ahmedadad
5. Anjali Prakash Lahoti, Ichalkaranji
6. Anuradha Anup Marda, Pandharpur
7. Anuradha Mundra, Ahmedadad
8. Anushree Kulkarni, Nagpur
9. Archana Vinodkuma, Parli Vaijanath
10. Arobinda Pradhan, Talcher
11. Ashok Kumar Sharma, Rishikesh
12. Ashwini Charkha, Pune
13. Ashwini Ketan Kerkar, Pune
14. Babasaheb Haribhau Palve, Pune
15. Charuta Puranik, Pune
16. Dakkshitaa Agarwal, Ahmedabad
17. Divya Narendra karwa, Aurangabad
18. Dwarka Prasad Gaggar, Mumbai
19. Geeta Sharma, Rajasthan
20. Harshith Polisetty, Pune
21. Hemalata Bhurke, Satara
22. Indumati Kulkarni, Latur
23. Janki Nileshkumar Ladda, Manwath
24. Jayasree Thati, Hyderabad, Telangana
25. Jigisha Dhalkari, Parbhani
26. Jyoti Girish Kulkarni, Pune
27. Jyoti Hemanta Joshi, Aurangabad
28. Jyoti Shukla, Lucknow
29. Kajal Mahendra Popat, Chennai
30. Kanta Soni Chittaurgarh, Rajasthan
31. Kantha Chandak, Hyderabad
32. Kapil Pandey, Pushkar
33. Kavita Ramji Holani, Jalna
34. Kavita Verma, Lucknow
35. Khyati Gupta, Lucknow
36. Kirti Suhasaria, Bolpur
37. Kusum Gopal Deshmukh, Pune
38. Lalita Malu, Indore
39. Madhuri Mandhana, Nagpur
40. Mangala Ashok Nagarkar, Pune

41. Mangala Chandrakant Mahajan, Pune
42. Mangala Dhoot, Pune
43. Manisha Lakshuman Dake, Junnar
44. Megha Taparia, Howrah
45. Nandini Subodh Sagade, Pune
46. Neev Amit Baldawa, Aurangabad
47. Nirmal Trivedi, Ahmedabad
48. Om Sudhir Chidrawar, Jintur
49. Parthsarthi K. Sodani, Aurangabad
50. Poonam R. Sarda, Aurangabad
51. Prajakta Pramod Ambekar, Pune
52. Pramod Kumar P Dave, Borivali
53. Preesha Rahul Bajaj, Kopargaon
54. Rakesh BhushanGb, Nagar
55. Rakesh Rani Kansal, Panipat
56. Rakhi A. Shrivastav, Nagpur
57. Ram Gopalratnam, Tiruchirappalli
58. Rama Satish Saboo, Aurangabad
59. Ramesh Sunderji Chaksota, Thane
60. Ranjan Prakash Suratwala, Mumbai
61. Rashmi Anil Karwa, Yeola
62. Reema Rajesh Datar, Pune
63. Rekha Rathi, Biratnagar
64. Rupal Shukla, Lucknow
65. Rupali Kabra, Jalgaon
66. Sangeeta Pradeep Garge, Pune
67. Savita Kunte, Nagpur
68. Shanta Bhutada, Pune
69. Sheetal Pradeep Aradhye, Surat
70. Shilpa Kabra, Erandol
71. Shilpa Rathi, Parbhani
72. Shobha Malani, Aurangabad
73. Shobha Narhar Kulkarni, Pune
74. Shrigouri Bedekar, Nagpur
75. Shrihari S. Tidke, Nagpur
76. Shrikrishna R. Nawade, Mumbai
77. Shrirang Karandikar, Mumbai
78. Shriya Ashish Karwa, Anand
79. Siddhi Charul Modak, Kolhapur
80. Sunanda R. Somani, Maharashtra
81. Sudhir P. Adhavalkar, Pandharpur
82. Suman Gupta, Delhi
83. Sunitha Somani, Vijayawada
84. Surekha A. Maniyar, Sangamner
85. Surendra S.Rashinkar, Pune
86. Suresh Chandra Garg, Rishikesh
87. Sureshchandra A. Gandhi, Surat
88. Surya Gupta, Lucknow
89. Swati Malani, Indore
90. Tejaswini Girish Kulkarni, Pune
91. Vandana Udawant, Rahuri
92. Varsha Rajesh Kasat, Beed
93. Vijay Kulkarni, Pune
94. Vijay Pratap Singh, Thane
95. Vijaya Balkisan Malpani, Nashik
96. Yatharth Dhalkari, Parbhani
97. Yogvardhan Pandey, Pushkar

LEARN GEETA

तस्मात् योगी भवार्जुन

आंकड़ों की नज़र में...

TOTAL EXTRA CLASSES

Gīta Guñjana - 60
Gīta Jijñāsu- 52
Gīta Pāṭhaka - 36
Gīta Pathika - 42
Gīta Vratī - 15

TOTAL PASSED EXAMINEES

Gīta Guñjana 76,000
Gīta Jijñāsu - 12087
Gīta Pāṭhaka - 2836
Gīta Pathika - 373
Gīta Vratī - 100

TOTAL GRAMMAR SESSIONS

Hindi - 18
English - 6

TOTAL VIVECHAN SESSION

Hindi - 382
English - 103

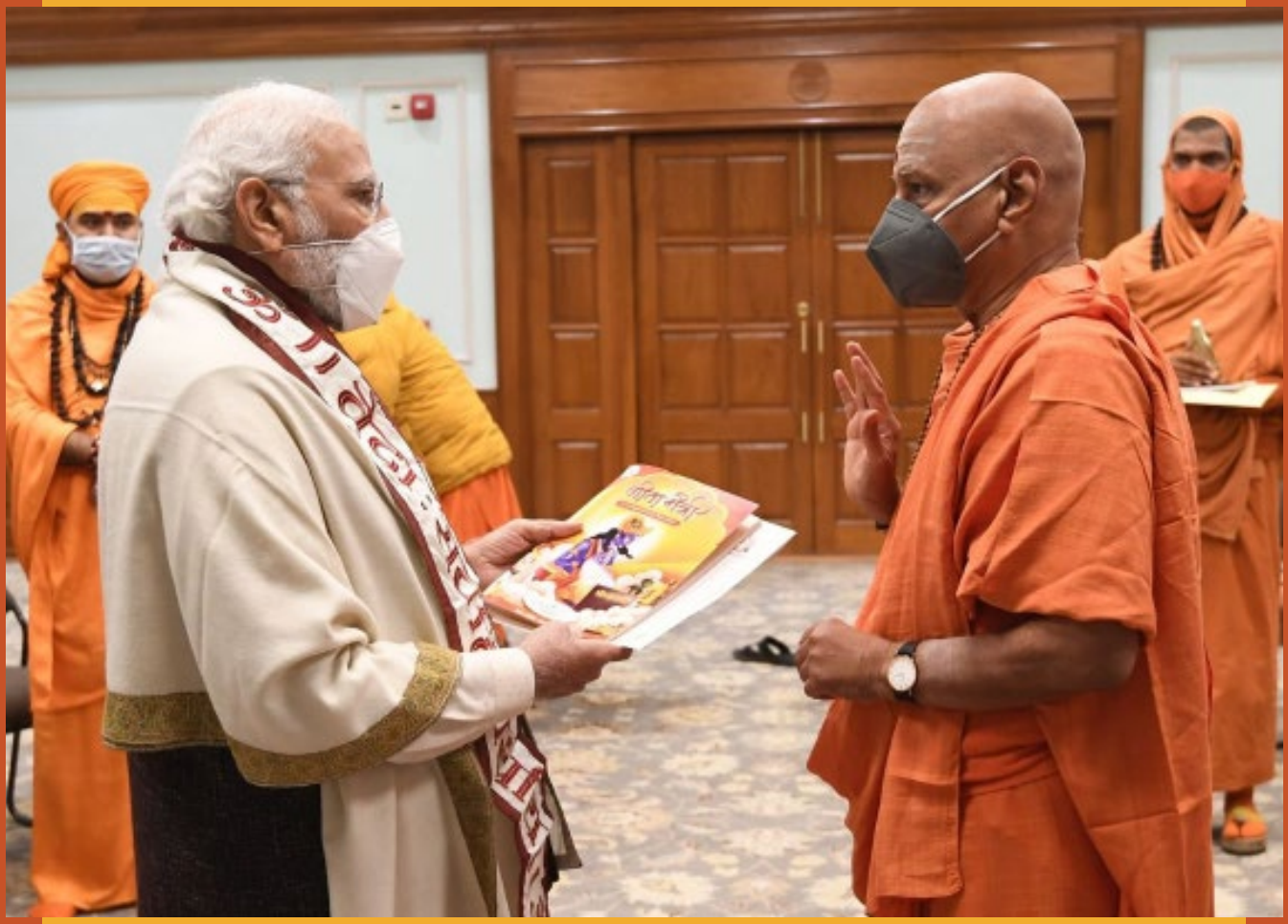
Geeta sewi Volunteers across the globe 4000

Registered Participants from 121 **Countries** 2,94,603

Geeta Classes Conducted yet 153951

From June 2020 to December 2021

सन्तों की गीता मैत्री



On being presented Geeta Maitri, **a Yearly Publication to Hon'ble Prime Minister** Shri Narendra Modi Ji **by our revered P.P.Swami** Shri Govindev Giriji Maharaj, **Founder President illustrating the glorious journey of Learngeeta with 3,00,000 plus Gita devotees from across the globe.**

Geeta Pariwar remains ever grateful for the sincere appreciation expressed in a personal note by our beloved Prime Minister.

All rights reserved, Geeta Pariwar, Sangamner (Maharashtra) 422605
Ph +91 2425 222299, +912425 225011
www.geetapariwar.org